Fortnightly per copy Rs. 4/- only

ओ३म्

18th March 2020

आर्य जीवन
ఆర్య జీవన్

संस्कृति संरक्षण व सामाजिक परिवर्तन का संकल्प

హిందీ-తెలుగు ద్విభాషా పక్ష పత్రిక

Date of Publication 2nd and 17th of every Month, Date of Posting 3rd and 18th of every Month

आर्य प्रतिनिधि सभा आ.प्र. (संयुक्त आन्ध्र प्रदेश अर्थात आ.प्र.-तेलंगाना राज्य)

घर नं. 4-2-15, महर्षि दयानन्द मार्ग, सुल्तान बाज़ार, हैदराबाद, के चुनाव के संदर्भ में

No. 405844/2020

आवश्यक सूचना

Date: 04-02-2020

శ్రీమాన్ మంత్రి/ప్రధాన్

ఆర్య సమాజము .... నమస్తే !

ఆర్య !

మొదటి నుండి తెలియచేస్తున్నట్టు ఆర్య ప్రతినిధి సభ ఆ.ప్ర. (సంయుక్త ఆంధ్రప్రదేశము అనగా ఆంధ్రప్రదేశ్ మరియు తెలంగాణ రాష్ట్రాలు) యొక్క ఎన్నికలు జులై ఆగస్టు ప్రాంతములో నిర్వహించబడునని ఆర్య ప్రతినిధి సభ సర్వసభ్య సమావేశంలో నిర్ణయించనైనది. అన్ని సమాజాలకు ప్రత్యేకమైన సూచనలు ఇస్తూ కొత్త సంవత్సరమైన ఉగాది వరకు (25 మార్చి 2020) మీ మీ సమాజాల యొక్క ఎన్నికలను, నియమాలను పాటిస్తూ విధిగా నిర్వహించు కోవలెనని సూచించడమైనది. మీరు నిర్వహించుకునే తేదిని ప్రతినిధి సభకు తెలియచేసినట్లైతే ఎన్నికలను నిర్వహించడా నికి ప్రతినిధి సభ నుండి ఎన్నికల అధికారిని పంపిస్తామని కూడా తెలియజేయడమైనది. మీ సమాజము యొక్క ఎన్నికలు సభ ఎన్నికల అధికారి యొక్క ఆధ్వర్యంలోనే నిర్వహించుకోవలెను. **ఏదో కారణం చేత 25 మార్చి 2020 నాటికి నిర్వహించుకోలేని పక్షములో ఏప్రిల్ 20 వరకు నిర్వహించుకోవచ్చును కాని ఎట్టి పరిస్థితులలో 30 ఎప్రిల్ 2020 లోగా ఎన్నుకోబడిన ప్రతినిధుల యొక్క ఫారాలను అన్ని నియమాలను, షరతులను పూర్తిచేసి అవసరమగు రుసుములను చెల్లించుకొని సభకార్యాలయములో దాఖలు చేయవలెను. ఫారాలను దాఖలు చేసే తేది అనగా 30 ఏప్రిల్ 2020 ఆఖరి తేదిగా పరిగణించవలెను ఇందులో ఏ మాత్రము మార్పు ఉండదు.** కావున సమాజాలకు సంబంధించిన అధికారులకు సూచించడమేమనగా విధాలన్నింటిని పాటిస్తూ మీమీ సమాజాల యొక్క ఎన్నికలను నిర్వహించుకోగలరని సూచిస్తున్నాము. సభకు పంపించే ప్రతినిధులను ఎన్నుకునేటప్పుడు మొదటి 9 సభాసధులపై ఒకరిని ఆ తదుపరి ప్రతి 20 సభాసదులకు ఒకరిని ఎన్నుకోవచ్చును.

ఆర్య ప్రతినిధి సభ ఆంధ్రప్రదేశ్ -తెలంగాణ ఎన్నికల సందర&భంలో ఆవశ్యక సూచన

ఆర్య ప్రతినిధి సభ ఆ.ప్ర. (ఆంధ్రప్రదేశ్ మరియు తెలంగాణ రాష్ట్రాలు) ఎన్నికల సందర్భంలో ఏ ఆర్య సమాజాలు ఆర్యప్రతినిధి సభతో అనుబంధితంయై ఉన్నవో ఆ-ఆ ఆర్య సమాజాలకు ప్రతినిధులను పంపుటకు అధికారము ఉన్నది. ఆర్య సమాజముల అధికారులతో విజ్ఞప్తి ఏమనగా తమ-తమ ఆర్య సమాజముల యొక్క ఎన్నికలను ఇంతకు ముందు సూచించినట్లు లేదా మొదటి పేజి సూచించినట్లు ఎన్నికలను నిర్వహిఇచుకొని 30 ఏప్రిల్ 2020 నాటి వరకు మీ సమాజము నుండి ప్రతినిధి సభకు పంపవలసిన ప్రతినిధుల యొక్క ఫారాలను నియామాలు అన్నింటిని పాటిస్తు సభాకార్యాలయములో దాఖలు చేయవలెను. కింది వివరములతో ప్రతినిధి ఫారాలను సమాజము యొక్క ముద్ర వేసి దాఖలు చేయవలెను.

1. సమాజము యొక్క వివరణ. 2. సమాజము యొక్క ప్రతిజ్ఞ పత్రము.

3.సమాజ యొక్క సర్వసభ్య సమావేశములో ప్రతినిధులు ఎన్నుకోబడిన పత్రము. 4. ప్రతినిధి యొక్క ప్రార్థన పత్రము.

5. ప్రతినిధి యొక్క ప్రతిజ్ఞ పత్రము. 6. ఆర్య ప్రతినిధి సభకు సమాజము వైపున ఇవ్వవలసిన ప్రతిజ్ఞ పత్రము (affidavit)

7. ఆర్య సమాజము యొక్క సర్వసభ్య సమావేశము నిర్వహించుచున్నట్లు సభాసదులకు ఇవ్వబడిన సూచన (సభాసదుల యొక్క సంతకాలతోసహాగల పట్టిక) మరియు ఎన్నిక వివరణ మినట్‌బుక్ నుండి ఇవ్వవలెను. 8. ఇవ్వవలసిన దశాంశము మరియు ఇతర శుల్కము.

అ) సభాసదుల వార్షిక సభ్యత్వ రుసుముపై 10% (3 సం॥ల కాలమునకు సంబంధించినది మరియు ప్రతి సభ్యుడి సభ్యత్వ రుసుము రూ॥ 250/- ప్రతి సంవత్సరము ఉండును)

ఆ) ప్రతి ఒక్క ప్రతినిధి యొక్క ప్రతినిధి శుల్కము రూ॥ 25/- ప్రతి సంవత్సరము.

ఇ) ప్రతి ఒక్క ప్రతినిధి యొక్క ప్రతినిధి శుల్కము రూ॥ 25/- ప్రతి సంవత్సరము

ఈ) సమాజము నుండి నూడు సంవత్సరములకు గాను ఆందోళన శుల్కము రూ॥ 300/-.

ఎ) సమాజమునకు సంబంధించిన అచల ఆస్తి వివరణ, ఆస్తి నుండి వచ్చిన ఆదాయముపై అనగా మొత్తము ఆదాయముపై ప్రతి సంవత్సరానికి 2% చొప్పున మొత్తము 3 సంవత్సరాలకు గాను ఆదాయ శుల్కము ఇవ్వవలెను. లేదా మొత్తము మూడు సంవత్సరములకు గాను ఆస్తిపై వచ్చిన ఆదాయమునకు రూ॥ 5,000/- కట్టినచో సరిపోవును. (ఏది ఎక్కువ ఉంటే దానిని స్వీకరించబడును). సమాజము వారు నిర్వహించు వివాహ సంస్కారములపై వివాహ సంస్కారమును చేయించుటకు ప్రతి వివాహానికి తీసుకోబడె శుల్కము యొక్క 10% ఇవ్వవలెను. గత 3 సంవత్సరములలో నిర్వహించబడిన వివాహముల మొత్తము ఆదాయముపై 10% ఇవ్వవలెను.

భవదీయ

విఠల్ రావు ఆర్య

మంత్రి

ఆర్య ప్రతినిధి సభ ఆ.ప్ర. -తెలంగాణ

కార్యాలయ ఫోన్ నెంబర్లు : 040-24753827, 24756983, 66758707, 9849560691.

E-mail : aryapratinidhisabhatelanganaap@gmail.com, acharyavithal@gmail.com

आर्य समाज एवं वसुधैव कुटुम्बकम्
संविधान सर्वोपरि

[illegible]

आर्य समाज और सामप्रदायिकता

-श्री पं. नरेन्द्र जी

आर्य समाज एक राष्ट्रीय, आदर्शवादी, धार्मिक तथा सुधारक संस्था है । इसका प्रादुर्भाव ही समाज-सुधार तथा संसार के अंतर्गत भटकते हुए मनुष्यों का पथ-प्रदर्शन करने के उद्देश्य से हुआ है ।

ऐसे समय जबकि मतान्धता बढ़ रही थी, संकुचित दृष्टिकोण को प्रोत्साहन प्राप्त हो रहा था, लोग जन्म-मूलक जाति पाति के विचारों से उन्मत्त थे, गरीबों का शोषण हो रहा था, एक का अधिकार दूसरा छीन रहा था, दरिद्रता बढ़ रही थी, पाशविक वृत्ति व्याप्त थी, स्वार्थ-परायणता अपनी सीमा को पार कर चुकी थी, लोगों का धर्म डांवाडौल अवस्था में था, पापों की कालिमा फैल रही थी, मानवता का अभाव होता जा रहा था और लोग अत्याचारों पर उतर जाए थे तब ऐसी स्थिति में परमात्मा को भी दया आयी और उसने मनुष्यों को सर्वनाश से बचाने के लिए अपना एक दूत पठाया ।

प्रातः स्मरणीय महर्षि भगवान् दयानंद का प्रदुर्भाव हुआ । उनका आना था कि निष्क्रिय हृदयों में प्राणों का संचार होने लगा । आहत मानवता के धाव भरने लगे । आच्छादित तम तिमिर भागने लगा और प्रकाश की किरणें प्रबाहित होने लगी । बिछुड़े हुए परस्पर मिलने लगे और भटकता हुआ संसार अपना पथ खोजने में अग्रसर हुआ । भगवान् दयानंद का आगमन संसार के लिए प्रकाश और प्रगति की किरण थी । इतना ही नहीं ऋषि दयानन्द का आगमन मंगल प्रभात और शुभशकुन था । डूबने वाले उभरने लगे । पीड़ित पददलित तथा शोषितों ने अपना सखा पाया । दुष्कृत्यों का अंत हुआ और भोग विलास तथा ऐश्वर्य शालीनता शाही की समाप्ति हुई ।

आर्य समाज कीस्थापना हुई और घर-घर धर्म की जय-जयकार गूंज उठी । धर्म और संस्कृति को प्रसारित होने का अवसर प्राप्त हुआ । ईश्वरके प्रति लोगों में आस्था होने लगी एवं लोग सदाचरण के लिए प्रेरित होकर सतकर्मो में तल्लीन होने लगे । जाति पांति के बंधनों की श्रृंखला शिथिल होने लगी । पूंजीवाद और निर्धनता में संघर्ष प्रारम्भ हुआ, दरिद्रिय और सम्पन्नता में भी संघर्ष हुए बिना न रह सका । अविद्यांधकार ने मुखमोड़ा इसके स्थान पर विद्या का प्रकाश होने लगा ।

आर्य समाज की सब से बड़ी विशेषता यह है कि इसकी स्थापना ही धर्म-प्रचार और देश-सेवा के उद्देश्य से की गई । जहां वह सार्वभौमिक वैदिक धर्म का प्रचार करता है, एवं अनुवर्ती है, वहीं अपने देशके प्रति अटूट-श्रद्धा और प्रेम भी रखता है । इसको अपना देश सर्वाधिक प्रिय है । आर्य जाति में स्वदेश प्रेम की भावना कूट-कूट कर भरी हुई है । सर्व प्रथम आर्य समाज ने ही लोगों में देश-भक्ति की भावना को जाग्रत किया था । वे चाहे किसी भी मत के मानने वाले क्यों न रहे हों उन्हें इस ओर आकृष्ट किया । राष्ट्रीयता की भावना लोगों ने फैलाने का इसको सर्वाधिक श्रेय प्राप्त है । साथ ही यह संसार में एकता और संगठन की आवश्यकता को भी अनुभव करता है । इसके सिद्धान्त सार्वभौमिक है । एवं दूसरे अर्थों में यह मानवता का नेतृत्व करने आया है । इसकी सेवा की नींच ही उच्चादर्शों पर रखी गई है । यह जाति पांति की रेखाएं खींचकर परिधि नहीं बांधता और ना ही संकुचित दृष्टिकोण से किसी विषय पर विचार हीकरता है । रही बात सांप्रदायिकता की यह तो स्वप्न में भी संभव नहीं कि आर्य समाज इसको पसंद करे । समस्याएं चाहे धार्मिक हों अथवा सामाजिक या राजनीतिक वा राष्ट्रीय विशाल दृष्टिकोण से देखना ही इसका स्वभाव रहा है । इसके पास मत या परम्परा के अंधविश्वासों का कोई माप-दण्ड नहीं और न ही यह बात-बात में धर्म अथवा मत की दुहाई देकर अड़ंगा डालता है । किसी बात को मानकर फिर आना-कानी भी नहीं करता । छूत-छात को तो मानता ही नहीं और न संसार में किसी को भेद-भाव की दृष्टि से ही देखता है । इस प्रकार वह परमात्मा की कृपा को किसी वर्ग विशेष की वपौती नहीं मानता । वह तो सारे संसार को ''वसुधैव कुटुम्बकम्'' की दृष्टि से देखता है । सब को नेक बनाने की दिशा में प्रयत्नशील है ।

सांप्रदायिकता का पोषण और

संकुचित दृष्टिकोण अंधविश्वासों और परम्पराओं पर आधारित रहने वाली जातियों की मनोवृत्ति की उपज है जो भत और सांप्रदायिकता को नशीली वस्तुओं की भांति घोल-घोल कर पीते हैं और इस मातन्धता के नशे में सारी दुनिया को देखने के अभ्यासी हैं । बाते तो समानता और समभावों की होती हैं किंतु व्यवहार इस से विपरीत होता है । एक से दूसरे वर्ग के लोगों में घृणा और भेदभाव पैदा करना इनका उद्देश्य होता है । वास्तविक रूप में जो लोग सांप्रदायिकता का विष फैलाते है वे कूपण्डूक की भांति अपने कुएँ की परिधि में ही पड़े रहते हैं । यही लोग सांप्रदायिकता को प्रोत्साहन देकर मज़हब की दुहाई देते हुए ताना-बाना बुनने में तल्लीन रहते हैं ।

संसार का वातावरण बदल गया है । यह अब जनतन्त्र के उषाकाल में प्रविष्ट हों पोषण प्राप्त कर रहा है । साथ हीसंसार में एक नयावाद ''विश्वबन्धुत्ववाद'' परिपुष्ट हो रहा है जिसका जन्मदाता आर्य समाज रहा है । ऐसी संस्था का सांप्रदायिकता से तो क्या उसकी छाया से भी संबन्ध नहीं हो सकता । जब सांप्रदायिकता को ही आर्य समाज में स्थान नहीं तब इसकी जन्मदात्री पक्षपातता को क्या स्थान मिल सकता है ? सांप्रदायिकता अपनी मौत आप समाप्त हो के ही रहेगी ।

आर्य समाज जैसी सार्वभौमिक मानवतावादी संस्था को भी कुछ लोग साम्प्रदायिक समझते हैं । वह इसलिए समझते हैं कि या तो उन्हें वस्तुस्थिति का ज्ञान नहीं अथवा समाज के नाम पर सामप्रदायिकता को बढ़ावा देना चाहते हों । आश्चर्य तो उस समय होता है जबकि उच्कोटि के विद्वान् व्यक्ति भी आर्य समाज पर सांप्रदायिक होने का आरोप लगातेहैं । बहुधा यह वह व्यक्ति होते हैं जो वास्तविकता की अपेक्षा नीति पर अधिक बल देते हैं । यदि दिन के प्रकाश में किसी को सूर्य ही न दीखे तो इसमें सूर्य का क्या दोष हो सकता है ।

आर्य समाज आरम्भ से ही समाज सुधार के कार्यों में आग्रणी रहा है और जो संस्थाएँ इस दिशा में प्रयत्नशील रहीं उन्हें भी वह यथोचित सहयोग देता रहा है । भारत की राजनीति में इसका व्यक्तिगत रूप में बहुत बड़ा भाग रहा है । वैसे भी स्वाधीनता संग्राम में पंजाब केसरी श्री लाला लाजपतराय जी तथा श्री स्वामी श्रद्धानंद जी जैसे आर्य वीरों ने बढ़-बढ़ कर भाग लिया । इतना ही नहीं बल्कि हज़ारों और लाखों आर्य समाजियों ने देश और जाति के लिए कार्य किया है । इनके त्याग और बलिदानों से सदैव ही राष्ट्रीय आंदोलनों को बल प्राप्त होता रहा है और अग्रणी नेतां की श्रेणी में आर्य समाजी स्थान प्राप्त कर डटे रहे । स्वाधीनता प्राप्ति के उपरांत भी कांग्रेस का साथ देने और इस राष्ट्रीय संगठन को सुदृढ़ बनाने में आर्य समाजी आगे ही रहे हैं । आज भी राष्ट्र-निर्माण संबंधी कार्यों में आर्य समाज और इस के कार्य-कर्त्ताओं का प्रमुख भाग है । जब भीदेश और जाति का प्रश्न आया आर्य समाजी अग्रणी रहे । यदि इनका उल्लेख किया जाए और उद्धरण प्रस्तुत किए जायें तो एक बृहद काय ग्रंथ ही बन जायेगा । किंतु इस संक्षिप्त लेख में केवल यही दर्शाना अभीष्ट है कि आर्य समाज संप्रदायवादी संस्था नहीं है और न ही इसका सांप्रदायिकता से दूर का सम्बध हो सकता है ।

जहर देकर बापू को मारने की बनाई थी योजना, फिर इस तरह बची जान

-स्वतंत्र वार्ता

नील और अफीम जैसी नगदी फसलों से जहां एक तरफ ब्रिटिश उद्योग फल-फूल रहा था, वहीं इसकी खेती से किसान बरबाद हो रहे थे । मुनाफे ने ईस्ट इंडिया कंपनी को इतना अंधा बना दिया कि उसने बंगाल, ओडिशा और बिहार के किसानों की पचीस प्रतिशत जमीन पर अफीम और इंडिगो की खेती अनिवार्य कर दी । एक तरफ अफीम को चोरी से चीन भेज कर व्यापारी अपनी जेबें भर रहे थे, तो दूसरी तरफ यूरोप में नील बेचकर ईस्ट इंडिया कंपनी मालामाल हो रही थी । उन्हें इससे लेना-देना नहीं था कि नील खेतों को बंजर बनाकर किसानों को तबाह कर रही थी । दक्षिण अफ्रीका से वापस आने के बाद महात्मा गांधी को भी चंपारण के किसानों की इस बर्बादी की सूचना मिली और वे चंपारण चल पड़े ।

डब्लू एस इरविन उस समय इंडिगो प्लांटर्स का चंपारण में मैनेजर था । महात्मा गांधी के बीच में आ जाने से इस खेती के बंद अथवा कम होने से उसे अपनी बर्बादी का खतरा था । समस्या के हल के लिए उसने महात्मा गांधी को अपने घर पर आमंत्रित किया । इरविन ने अपने रसोइए की मदद से दूध में जहर मिलाकर गांधी जी को अपने रास्ते से हटाने की योजना बनाई । राज को राज रखने के लिए रसोइए को लालच व धमकी दी गई । लेकिन रसोइए ने महात्मा गांधी को गिलास का दूध पकड़ाते हुए कहा, **'सर, इस दूध में जहर मिलाया है ।'** यह सूचना कई लोगों के बीच में देकर उसने महात्मा गांधी की जान तो बचा ली, लेकिन अपनी बर्बादी नहीं बचा पाया । उसे जेल में बंद कर दिया गया और उसके घर को ढहा दिया गया । उसकी जमीन जब्त कर ली गई ।

परिवार उजड़ गया । यह रसोईया कोई और नहीं बल्कि मौतिहारी के बत्तख मियां अंसारी थे जिनके परिवार को आज भी वहां सम्मान से देखा जाता है । इतिहास में यह घटना पता नहीं क्यों जगह नहीं बना सकी, लेकिन सरकारी दस्तवेजों में इसका जिक्र है ।

संयम

-साने गुरुजी

यह ठीक है कि ज्ञान-विज्ञानपूर्वक, पूरे हार्दिक प्रेम से और अनासक्त रहकर कर्म करना चाहिए । लेकिन यह कहना सरल है । हमेशा ऐसे कर्म करते रहने के लिए काफी साधना की आवश्यकता होती है । अपने जीवन में संयम करने की आवश्यकता रहती है, क्योंकि बिना संयम के उत्कृष्ट कर्म नहीं किये जा सकते ।

यदि यह कह दिया जाय कि संयम भारतीय संस्कृति की आत्मा है तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी । भारतीय संस्कृति का आधार ही संयम है । हम शंकर के मन्दिर में जाते हैं, लेकिन वहाँ पहले बाहर कछुए की मूर्ति होती है । इस कछुए के दर्शन किये बिना शंकरजी के पास, मृत्युंजय के पास नहीं जा सकते । और कछुए का मतलब क्या है ? कछुए का मतलब हैसंयम की मूर्ति । एक क्षण में ही कछुआ अपना सारा शरीर अन्दर छिपा लेता है और क्षणभर में बाहर निकाल लेता है । जब उसके विकास का अवसर होता है, तब वह अपने सारे अवयव बाहर निकाल लेता है, और जब धोखे की सम्भावना रहती है, तब सारे अंग अन्दर कर ले जाता है । इन गुणोंवाला यह कछुआ भारतीय संस्कृति में गुरु माना गया है । यदि गुरु के पास जाना है तो कछुए की तरह बनकर जाओ । कछुए की भांति अपनी इन्द्रियों के स्वामी बनो । जब इच्छा हो तब इन्द्रियों को स्वतन्त्र करना भी आना चाहिए । जो संसार का स्वामी बनना चाहता है उसे पहले अपना स्वामी बनाना चाहिए । जिसे ईश्वर को अपना बना लेना है उसे पहले अपना मन काबू में करना चाहिए ।

शंकरजी की मूर्ति की कल्पना कीजिये । उनके तीसरा नेत्र है । यह नेत्र दोनो आँखों के बीच में है, और इस नेत्र का काम प्रहरी का है । आँख, कान, जीभ सारी इन्द्रियों पर इस नेत्र की दृष्टि रहती है । इसी तीसरे नेत्र में अग्नि है । हमारे जीवन के विकास में जो विरोधी हैं, उन सबको भस्म कर देने की शक्ति इस नेत्र में है । जबतक यह तीसरा नेत्र खुला नहीं रखा जाता, जीवन में सफलता नहीं मिल सकती ।

हमारी आँखें जहाँचाहे वहाँ न चली जायं, कान जो चाहें वह सुनने न लगे, जबान चाहे जोबोलने न लगे, खाने न लगे, हाथ चाहे जो करने न लगें और पैर जिधर चाहें उधर न जाने लगें । अपनी ध्येयानुकूल बातों की ओर ही हमारी इन्द्रियों को जाना चाहिए । इनमें इन्द्रिय-रूपी बैलों को हमारे जीवन-रथ को गड्ढे में न गिराते हुए लक्ष्य की ओर ही ले जाना चाहिए ।

ज्ञानेश्वरी में योग का वर्णन करते हुए तक अत्यन्त सुन्दर ओवी लिखी हुई है :

''युक्ताहारविहारस्य, युक्तचेष्टस्य कर्मसु ।
युक्तरवप्नावबोधस्य योगो भवति दुःखहा ।।''

गीता में जो यह श्लोक है उसी के ऊपर यह ओवी है । जिसे कर्मयोग की साधना करनी है उसके लिए यह संयम योग साधना भी आवश्यक है ।

नियमों का पालन करो, अगर बनना चाहते हो योगी

योगी का अर्थ है कर्मयोगी । सतत कर्म में मग्न हो जाना । हाथों से लगातार सेवा करते रहना । इसके लिएक्या करना चाहिए ?

सब बातें नापतोल से करनी चाहिए । तोलकर खाना चाहिए, तोलकर पीना चाहिए, तोलकर बोलना चाहिए, तोलकर चलना और तोलकर नींद लेनी चाहिए । इन्द्रियों को सब चीजें देनी चाहिए, लेकिन नाप-तोल से प्रमाण के साथ । ऐसा करते रहने से जीवन में प्रसन्नता रहेगी, यह बात केवल काल्पनिक नहीं है । यह तो अनुभवसिद्ध है ।

मान लीजिये, हमने ज्यादा खा लिया । अगर पकौड़ी खानी है तो मन में आया उतना खा गये । बासुंदी हुई तो पी गये खूब । तो परिणाम क्या होगा ? आलस्य आयगा । अधिक खाया कि अधिक लेटेने की इच्छा होगी और इतने से ही बस नहीं होगा । बदहजभी होगी, अजीर्ण होगा, पेट दर्द करने लगेगा और शायद बीमार भी पड़ना पडेगा । थोड़ी देर जबान का सुख अनुभव किया, लेकिन आगे तो दस दिनों तक अन्न की रुचि ही नहीं रहेगी । इन आगामी दस दिनों में कोई काम भी नहीं किया जा सकेगा ।

रात को गाना हुआ । सुनते रहे तो दो बजे तक । तो नींद पूरी नहीं हुई । जब नींद पूरी नहीं होगी तो पाचन भी अच्छा नहीं होगा । दूसरे दिन काम भी अच्छा नहीं होगा । काम करते आँखें बन्द होने लगेंगीं । इस प्रकार कर्म में सफलता नहीं मिलेगी ।

जिनके जीवन का कोई लक्ष्य है, जिनका जीवन सेवा के लिए है, उनको सारे काम प्रमाण से करने चाहिए । प्रमाण में ही सारी सुन्दरता है, प्रमाण में ही शोभा है । संयम में सौन्दर्य है । बहुत से, अविवेकी लोग संयम का मजाक उड़ाते हैं । वे कहते हैं कि 'हम ये बन्धन नहीं चाहते', लेकिन जो बन्धन अपने आप अपने ऊपर लगाया जाता है, वह बन्धन नहीं है । अपनी इच्छा का गुलाम होना कोई स्वतन्त्रता नहीं है । स्वतन्त्रता का अर्थ स्वेच्छाचार नहीं है । स्वतन्त्रता का अर्थ है विकास, और संयम के बिना विकास नहीं होता ।

सारी दुनिया को देखिये । आपको सर्वत्र संयम ही दिखाई देगा । वृक्ष को ही लीजिये । यह वृक्ष जड़ों से बन्धा हुआ है । यदि वॉक्ष कहे कि मैं पृथ्वी के साथ ऐसे क्यों बाँधा जाऊँ ? मुझे आकाश में उड़ने दो । मेरी जड़ तोड़ दो । तो वह मर जायगा । यदि वृक्ष की जड़ें तोड़ दी जायं तो क्या यह जिन्दा रह सकेगा ? वृक्ष जड़ों से बन्धा हुआ है । इसी कारण वह ऊँचा होता जाता है । इसी कारण उसमें फल-फूल आते हैं । उसकी सम्पत्ति का रहस्य उस दृढ़ संयम में ही है ।

सितार को लीजिये । सितार में तार होते हैं । अकेले उन तारों को ही जमीन पर रखिये। उन पर अँगुली फिराइये । उनसे कोई ध्वनि नहीं निकलेगी, लेकिन उन्हीं तारों को सितार की खूँटी से बाँधिये । अब तो उन बन्धनों में जकड़े हुएतारों में से मस्त बना देनेवालासंगीत निकलने लगेगा । वे जड़ तार चैतन्य बन जाते हैं । उनमें से अपार माधुर्य झरने लगता है । संयम में संगीत प्रकट होता है ।

नदी को देखिये । यदि पहाड़ों का पानी दसों दिशाओं में बहने लगे तो उससे प्रवाह नहीं बन सकता, लेकिन यदि वह पानी किसी एक खास दिशा में बहने लगे तो उससे प्रवाह प्रकट हो जाता है । प्रवाह को भी किनारों का बन्धन होता है । नदी दो किनारों से बन्धी हुई है । उन दोनों किनारों में से वह बहती है । यदि वह कहने लगे कि मुझे किनारों के इस बन्धन की आवश्यकता नहीं है तो क्या होगा ? पानी इधर-उधर फैल जायगा और चार दिन में सूख जायगा । नदी को बन्धन है इसीलिए उसमें गति है, गहराई और गम्भीरता है । उसे बन्धन है इसी कारण वह आगे-आगे बहती जाती है और महासागर से मिलती है । उसे बन्धन है इसी कारण तो वह हजारों एकड़

जमीन को उजाऊ बनाती है, उसे सदैव गीला रखती है। बन्धन के कारण नदी को अमरता प्राप्त हो गई है। संयम के कारण ही नदी समुद्र में मिल सकती है।

भाप को देखिये। यदि भाप बन्धन में न हो तो उसमें शक्ति न रहे। अपनी इच्छा से इधर-उधर जानेवाली भाप कमजोर है। प्रचण्ड नली में बन्द की हुई भाप प्रचण्ड यन्त्र चलाती है, बड़ी-बड़ी गाड़ियाँ चलाती है।

संय को तुच्छ मत समझिये। वह आपके विकास के लिए है। वह समाज के हित के लिए है ? यदि हम संयम का पालन न करें तो हमारे काम ठीक तरह से नहीं होंगे। यदि काम ठीक तरह नहीं होंगे तो समाज का नुकसान होगा। हम केवल अपने खुद के लिए ही नहीं हैं, यह बात हमें मालूम होनी चाहिए कि हम समाज के लिए हैं। हमारी यह देह, हमारा यह जीवन समाज के लिए है। सारी सृष्टि हमारा पोषण कर रही है। सूर्य प्रकाश देता है, बादल पानी देता है, वृक्ष फल-फूल देते हैं, किसान अनाज देता है, बुनकर वस्त्र देता है, स्कूल शिक्षादेता है। हम इस सारी सजीव-निर्जीव सृष्टि के आभारी हैं। अतः अपना जीवन उनकी सेवा में अर्पण करना हमारा काम है। यह जीवन जिसका है उसी को सेवा के द्वारा अर्पण करना है।

इसलिए इस जीवन में घुन नहीं लगने देना चाहिए। भगवान् की पूजा के लिए बिना सूंघे हुए फूल ले जाने चाहिए। वे न कुम्हलाये हुए हो, न कीड़े खाये हुए हों। रसमय और गन्धमय, स्वच्छ तथा सुन्दर फूल ले जाने चाहिए। हमारे इस जीवन-पुष्प को भी समाजरूपी भगवान् को अर्पण करना है। यदि जीवन को रसमय और गन्धमय बनाना है तो संयम की अत्यन्त आवश्यकता है।

इन्द्रियों को उत्तरोत्तर उदात्त आनन्द प्राप्त करने की आदत डालनी चाहिए। खाने-पीने का आनन्द तो पशु-पक्षी भी उठाते हैं। मनुष्य केवल खाने-पीने के लिए ही नहीं है। उसे भोजन अवश्य चाहिए, लेकिन वह किसी ध्येय के लिए। खाना-पीना और सोना पूर्णता के ध्येय के साधन बनने चाहिए।

न्यायमूर्ति रानाडे की एक बात बताई जा रही है। उन्हें कलमी आम पसन्द थे। एक बार आमों की टोकरी आई। रमाबाई ने आम काटकर न्यायमूर्ति के सामने तश्तरी में रखे। न्यायमूर्ति ने उसमें से एक-दो फाँकें खाईं। कुछ देर बाद जब रमाबाई ने आकर देखा तो आम की फाँकें उसमें रखी हुई थी। उन्हें अच्छा नही लगा। वह बोली, ''आपको आम पसन्द हैं, इसलिए मैं इन्हें काटकर लाई। फिर खाते क्यों नहीं ?'' न्यायमूर्ति ने कहा, ''आम अच्छे लगते हैं, क्या इसका यह मतलब है कि आम ही खाता रहूँ ! एक फाँख खा ली। जीवन में दूसरे आनन्द भी हैं।''

खाने-पीने की चर्चा करने में हमारा कितना समय चला जाता है। मानो हम जबान के गुलाम हो गये हैं। लेकिन हमें जानना चाहिए कि मिठास किसी वस्तु में नहीं, हमारे अन्दर है। हम अपनी मिठास उस वस्तु में डाले हैं और उस वस्तु को मीठी कहकर खाते हैं। सारी मधुरता हमारे अन्तरंग में है। जिसे वह मिठास प्राप्त हो गई है उसे कुछ भी दीजिये, सबकुछ मीठा-ही-मीठा मालूम होगा।

संसार के सारे महापुरुष संयमी थे। उनका भोजन सादा होता था। पैगम्बर मुहम्मद साहब सादी रोटी खाते और पानी पी लेते थे। लेनिन का आहार अत्यन्त सादा था। महात्मा गाँधी भोजन में पाँच वस्तुओं से अधिक वस्तु नहीं खाते थे। यदि महात्माजी का आहार-विहार इस प्रकार नियमित न होता तो वह इतना महान् कार्य न कर सके होते। देशबन्धुदास की पत्नी वासन्तीदेवी उनकी बहुत चिन्ता रखती थीं। वह देशबन्धु के भोजन की काफी खयाल रखती थी।

लेकिन इस आहार-विहार के अलावा भी दूसरा संयम है। यदि समाज में आनन्द फैलाना है तो इस उदात्त संयम का महत्त्व जितना बताया जाय, उतना कम है। हमारे भारतवर्ष में प्राचीन काल से संयुक्त कुटुम्ब-प्रणाली बिना संयम के चल ही नहीं सकती। यदि संयम न हो तो दस आदमियों के मुँह दस दिशाओं में हो जायंगे। यदि कुटुम्ब का प्रत्येक व्यक्ति अपनी इच्छा को ही प्रधानता देने लगे तो सब लोगों की कैसे पट सकेगी। मनोमालिन्य बढ़ने लगेगा और झगड़ों का सूत्रपात होने लगेगा।

संयुक्त कुटुम्ब-प्रणाली में मुखिया पर बहुत जिम्मेदारी होती है। उसे सबकी मर्जी रखनी पड़ती है। उसके लिए उसे बहुत त्याग करना पड़ता है। वह मुखिया अपने बच्चों के लिए अधिक गहने नहीं बनवायेगा। अपनी पत्नी के लिए सबसे पहले अच्छी साड़ियाँ नहीं खरीदेगा। अपने छोटे भाइयों के बच्चे और उनकी बहुओं का खयाल वह पहले रखेगा। वह अनके लिए कपड़े-गहने आदि पहले लायेगा। ऐसा करने से ही उसके शब्दों का मान रहेगा। तभी कुटुम्ब के सब लोगों के मन में उसके लिए अपनेपन और आदर की भावना रहेगी। त्याग से इसी प्रकार वैभव मिलता है।

सन्ध्या के समय एक मन्त्र बोलते हैं। उसका एक चरण निम्नलिखित है :

''सर्वेषामविरोधेन ब्रह्मकर्म समारभे।''

(अब किसी का विरोध नहीं है। अब मुझे अपना ब्रह्मकर्म प्रारम्भ करने दो।)

'सबके साथ अविरोध'-ये शब्द अत्यन्त महत्त्वपूर्ण हैं। पहले ब्रह्मचर्य कैसा ? पहले स्नान सन्ध्या कैसे ? देवदर्शन कैसा ? जप-तप कैसे ? पहले समाज में एकता का निर्माण कीजिये, स्नेह का निर्माण कीजिये। मानव जाति में से विरोध दूर कीजिये। कलह मिटा दीजिये। द्वेष-मत्सर आदि का अन्त कर दीजिये और फिर अपने ब्रह्मकर्म को प्रारम्भ कीजिये।

इस अविरोध का निर्माण किस प्रकार हो सकेगा ? यदि प्रत्येक व्यक्ति संयम के द्वारा अपनी वासना-इच्छा आदि पर जरा लगाम लगाये तो अविरोध का निर्माण होना सुलभ होगा। यदि हारमोनियम का प्रत्येक स्वर जैसा चाहे वैसा चिल्लाने लगे तो संगीत किस प्रकार निकल सकेगा ? उन स्वरों को अपनी इच्छा संयत बनानी पड़ेगी। इसी प्रकार यदि मानव जाति जीवन में ईमानदारी के साथ संगीत निर्माण करना चाहे तो उसे अपने स्वरों पर संयम रखना चाहिए।

आज भारतीय जीवन में संगीत नहीं है। प्रान्त-प्रान्त में लड़ाई है। मतभेद हो सकते हैं, लेकिन जब मतभेद में से मत्सर का भूत खड़ा हो जाता है तो डर लगता है। भारत संयुक्त कुटुम्ब-प्रणाली का एक प्रयोग है। भारत एक राष्ट्र है। पूर्वजों ने कभी भारत के टुकड़ों की कल्पना नहीं की। उन्होंने हमेशा अपनी आँखों के सामने भारतीय ऐक्य की भव्य कलपना रखी थी। हम स्नान करते समय केल महाराष्ट्र की नदियों का ही स्मरण नहीं करते, बल्कि सारे भरतखण्ड की नदियों का स्मरण करते हैं। हम कहते हैं-'हर गंगे यमुने नर्मदे ताप्ती कृष्णा गोदावरी कावेरी।' कलश की पूजा करते हुए उस कलश में हम सारा हिन्दुस्तान देखते हैं :

''गंगे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति।
नर्मदे सिन्धु कावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु॥''

इस प्रकार प्रमुख नदियों का हम स्मरण करते हैं। अयोध्या, मथुरा, माया, काशी, काँची, अवंतिका, पुरी, द्वारावती इन पवित्र पुरियों को हमने भारत की चारों दिशाओं में रखा है।

''दुर्लभ भारते जन्म ।''

यह बात ऋषि ने बड़े गर्व के साथ कही है । पूर्वजों की आँखों के सामने अंग, बंग, कलिंग न थे । गुर्जर, विदर्भ, महाराष्ट्र न थे । उनकी आँखों के सामने था भारत ।

इस विशाल भारत में अनेक प्रान्त है । जिस प्रकार बड़े कुटुम्ब में बहुत-से भाई हैं, इन भाइयों को एक-दूसरे के साथ संयमपूर्वक व्यवहार करना चाहिए । यदि एक ही कुटुम्ब में रहना है तो, 'अपनी ढपली अपना राग' से काम नहीं चल सकेगा । अपना-अपना स्वर ऊँचा करने से काम नहीं होगा । यूरोप में बहुत-से छोटे-छोटे देश हैं और वे आपस में मार-काट करते हैं । यदि वैसी ही बातें भारत में न करनी हैं तो भारत को सावधान हो जाना चाहिए और संयुक्त कुटुम्ब में एक को दूसरे की सुख-सुविधा का खयाल पहले रखना चाहिए । 'पहले मेरा नहीं, पहले तेरा !' जिस प्रकार हमें यह अपने कुटुम्ब में करना पड़ता है, वैसा ही हमें भारतीय कुटुम्ब में करना पड़ेगा । महाराष्ट्रियों को गुजरातियों को कहना चाहिए, ''धन्य गुजरात, महात्माजी को जन्म देनेवाला गुजरात धन्य है !'' गुजरात को महाराष्ट्र को कहना चाहिए, ''धन्य महाराष्ट्र, लोकमान्य को जन्म देनेवाला, छत्रपति शिवाजी को जन्म देनेवाला, बहादुरों का महाराष्ट्र धन्य है !'' बंगाल को कहना चाहिए, ''हे बंगेश, तू धन्य है । जगदीशचन्द्र प्रफुल्लचन्द्र, रवीन्द्र को जन्म देनेवाला, देशबन्धु, सुभाष बाबू को जन्म देनेवाला, श्रीरामकृष्ण व विवेकानन्द को प्रसव करनेवाला, बलिदान देनेवाला, सैकड़ों सत्पुत्रों से सुशोभित होनेवाला, तू धन्य है !'' पंजाब को कहना चाहिए, ''हे पंजाब, तू दयानन्द की कर्मभूमि है, रामतीर्थ की जन्मभूति है, श्रद्धानन्द, भगतसिंह, लालाजी की तू माता है । तू महान् है !'' सीमाप्रान्त को कहना चाहिए, ''२५ लाख की जनसंख्या में से १६ हजार सत्याग्रही देनेवाले प्रान्त, तू धन्य है ! भगवान् के सेनिक देनेवाले प्रान्त, तू भारत की शोभा और आशा है ।'' भारत में इस प्रकार का दृश्य दिखाई देना चाहिए कि वे इस तह एक-दूसरे की मुक्तकण्ट से स्तुति कर रहे हैं, एक-दूसरे से स्फूर्ति प्राप्त करते हैं और एक-दूसरे का हाथ अपने हाथ में लेते हैं, लेकिन इसके लिए बड़े दिल की जरूरत है । इसके लिए संयम की जरूरत है । अपना अहंकार दूर करना चाहिए ।

जो दूसरे के सुख-दु:ख का विचार करने लगता है, उसके लिए संयम रखना सरल हो जाता है । 'यदि मैंने ऐसा किया तो दूसरे पर इसका क्या असर होगा, यदि मैं इस प्रकार बोला तो इसका क्या परिणाम होगा, ऐसा लिखने से व्यर्थ ही मन तो न दुखेगा, यदि मैं पैर बजाकर चला तो उससे किसी की नींद में बाधा तो न आयगी, यदि रात के समय जोर-जोर से बात करते हुए या गाना गाते हुए चला तो उससे किसी को कष्ट तो न होगा, सभा में यदि हम आपस में बातचीत करने लग गया तो उससे दूसरे भाषण सुननेवाों को बाधा तो नहीं होगी ?' इस प्रकार एक-दो नहीं, सब छोटी-से-छोटी बातों पर हमारा ध्यान रहना चाहिए । लेकिन हमारे देश में तो यह आदत ही नहीं है । दूसरों का विचार क्षणभर के लिए भी हमारे मन में नहीं आता । कारण है सहानुभूति की कमी । जहाँ महानुभूति नहीं है, यहाँ संयम नहीं है ।

हम लोगों में यह भावना ही नहीं रही है कि हमारे काम से दूसरे को कष्ट होगा । मानो हम अकेले ही जीवित हैं । हमारे आसपास कोई नहीं है । इसी भावना से हम सारा व्यवहार करते हैं । पश्चिमी देशों में यह बात नहीं है । उन देशों में सार्वजनिक जीवन में अधिक संयम है । वे रास्ते में व्यर्थ हल्ला नहीं करते । ऐसी कोई बात नहीं करते जिसमें दूसरों को कष्ट हो । सर्वत्र आपको व्यवस्थितता दिखाई देगी । बिना संयम के व्यवस्थितपन नहीं आ सकता । हाँ संयम नहीं है वहाँ एकम अव्यवस्था होगी । अपनी सभा को देखिये, अपने जुलूस देखिये, स्टेशन पर टिकट की जगह देखिये, हर जगह आपको संयमहीन जीवन दिखाई देगा । और यदि कोई संयम की बात करता है तो उसकी मजाक उड़ाई जाती है । यदि कोई कहता है कि जरा धीरे बोलिये, तो उसे चट से जवाब दिया जाता है कि चुप रहिये ! बड़े सभ्य आये !

हम कोई शब्द एकदम बोल देते हैं और उससे हमेशा के लिए दिल फट जाते हैं । अपना हम कोई मत बिना सोचे-समझे प्रकट करते हैं और हमेशा के लिए वैर पैदा हो जाता है । एक बार टूटे हुए मनों को जोड़ना कठिन हो जाता है । 'टूटा मोती फूटा मन, जोड़ न सकता स्वयं विधाता ।' संसार में जोड़ना कठिन है, तोड़ना सरल है । वृक्षों का पोषण करना कठिन है, लेकिन उसे एक ही क्षण में तोड़ा जा सकता है । घर बनाना कठिन है, उसे गिरा देना सरल है । हमें जीवन जोड़ने हैं । वे संयम से ही जोड़े जा सकते हैं । हम भैंसे को छोटा मानते हैं, क्योंकि वह संयमी नहीं है । वह हमेशा मारने के लिए सींग उठाता रहता है, हमेशा आँखें दिखाता है । हम उन्हीं पशुओं की कीमत करते हैं, जो संयमी हैं, जो लगाम लगवाते हैं, गाड़ी में अच्छी तरह चलते हैं, हल ठीक तरह चलाते हैं । जो घोड़ा लगाम नहीं लगवाता, उसे कौन अपने पास रखेगा ! उसके लिए कौन पैसे खर्च करेगा ! पशुओं को चमड़े की लगाम लगाई जाती है, लेकिन मनुष्यों को इस प्रकार की लगाम लगाने की जरूरत नहं है । बुद्धि ही मनुष्य की लगाम है । मनुष्य विचार करके व्यवहार करता है । जो विचारपूर्वक व्यवहार नहीं करता वह मनुष्य नहीं है । संयमी होना मनुष्यत्व का पहला चिह्न है, लेकिन यह चिह्न हमें कितने लोगों के पास दिखाई देगा ! संसार में आज लोग शेर ौर सियार की तरह व्यवहार करते हैं । वे एक-दूसरे को खाने के लिए दौड़ते हैं । अपने को उच्च समझ कर दूसरों को तुच्छ मानते हैं । सर्वत्र संयम का पूरा अभाव दिखाई दे रहा है।

दो पत्थरों को जोड़ने के लिए सीमेंट की जरूरत होती है । जब संयम का सीमेंट लगाया जायगा तभी जीवन जोड़े जा सकेंगे, एक प्रान्त दूसरे प्रान्त से र एक राष्ट्र दूसरे राष्ट्र से जोड़े जा सकेंगे, लेकिन यदि अहंकार रहा तो यह नहीं हो सकेगा । किसी प्रान्त का भूतकाल उज्ज्वल होता है, लेकिन यदि उस उज्ज्वल भूतकाल के बल पर हम कदम-कदम पर दूसरों को तुच्छ समझने लगें तो उससे क्या लाभ ! ऐसे समय यह अच्छा लगता है कि यदि भूतकाल अच्छा न होता तो ही अच्छा होता । जिस इतिहास से हम घमण्डी बनते हैं, हमें लगता है कि हम ही अच्छे हैं और सब मूर्ख हैं, तो उस इतिहास का न होना ही हमें पसन्द करना पड़ेगा । हमें भूतकाल के इतिहास से स्फूर्ति मिलनी चाहिए, लेकिन वह पड़ोसी भाई को चिढ़ाने के लिए न हो । राष्ट्र को यह बात अपने खयाल में रखनी चाहिए ।

संयम का अर्थ शरणता नहीं है । संयम का अर्थ बावलापन नहीं है । संयम का अर्थ है शक्ति । वह जीवन के विकास के लिए है । वह उत्कृष्ट कर्म करने के लिए है । वह अपने हाथों अपार सेवा करने के लिए है । वह समाज में अधिक आनन्द, अधिक संगीत लाने के लिए है । संयम सार्वभौम वस्तु है ।

जातिगत जनगणना की मांग

-स्वतंत्र वार्ता से

पौराणिक कथा के अनुसार भगवान दत्तात्रेय ने भंवरे को अपना गुरु माना है। भंवरे से उन्हें एक बात समझ में आई कि भंवरा कमल में आसक्ति के कारण बंद हो जाता है। कभी-कभी भंवरा कमल में बंद होकर हाथी के पांव के नीचे कुचल कर मर भी जाता है। इससे ज्ञात होता है कि भंवरे में शक्ति तो है। उसके पास इतना डंक तो जरूर होता है कि वह लकड़ी को काटकर बाहर निकल जाए। लेकिन आसक्ति में बंधने से उसकी दशा क्या होती है ? वह कमल में फंसकर हाथी के पांव से कुचल दिया जाता है।

इंसान को अगर यह बात समझ में आ जाए कि उसमें इतना सामर्थ्य है कि कोई भी ऐब, कोई भी व्यसन या कोई बुरी आदत उसे बांध नहीं सकती। अगर मनुष्य ललकार कर खड़ा हो जाए, तो हर जंजीर को तोड़ सकता है, लेकिन मनुष्य सोचता ही नहीं, आसक्ति में पड़ा हुआ है। भंवरा भी यही समझ रहा है कि आसक्ति से बढ़कर दुनिया में कोई बंधन नहीं है। अगर विवेक जाग जाए और इंसान चुनौतियों से लड़ने की सामर्थ्य जगा ले, तो हर आसक्ति के बन्धनों को तोड़ा जा सकता है।

मनुष्य में यही कमजोरी है कि वह आसक्ति में बंधता जाता है। अगरकोई लोहे की जंजीर गले में डाली जाए,तो कितनी पीड़ा होती है। कोई बंधना पसंद नहीं करता है, लेकिन सोने की जंजीर किसी आदमी के गले में डाल दीजाए औरकहा जाए, कि यह बंधन आपके लिएहै, तो वह हाथ जोड़कर कहेगा कि ऐसा बंधन रोज-रोज डाला कीजिए।

इसलिए महापुरुष कहते हैं, कि संसार को देखने के लिए दो तरह की दृष्टियां हैं। एक अपेक्षा दूसरी उपेक्षाकी दृष्टि। अपेक्षा होती यह है, जैसे आप सत्संग स्थल तक चलकर आते हैं, जैसे आप सत्संग स्थल तक चलकर आते हैं, तो रास्ते में कई मकान देखते हैं, जब आप मकान देखते हैं, तो कोई मकान ऐसा भी होता है, जहां आपकी नजरें ठहर जाती हैं। आप सोंचते हैं कि मकान बनाने का अगर मुझे मौका मिलेगा तो मैं भी ऐसा ही मकान बनाऊंगा। बहुत अच्छे ढंग से इस आदमी ने बनाया है। आपने यह सब अपेक्षा की दृष्टि से देखा है, इसलिए आध्यात्मिक सभा में बैठने के बाद भी मकान आँखो में घूमता है। किसी नए मॉडलकी चलती हुई गाड़ी देख ली तो मन में उसकी अपेक्षा होगी, सत्संग में भी बैठे-बैठे गाड़ी का ध्यान आएगा। किसी महिला ने अगर शो-रूम में कोई अच्छा आभूषण या साड़ी देख ली हो तो उसके मन में उसकी इच्छा बैठ जाएगी।

इसके विपरीत अगर आप उपेक्षा से देखेंगे तो इच्छा पैदा नहीं होगी। इसिलिए तो कहते हैं, कि कमल की तरह दुनिया में रहना सीखिए। तभी तो हमारे देश में कमल को इतना महत्व दिया गया है। महान पुरुषों के अंगो का वर्णन, उनकी शोभा, उनकी सुन्दरता का वर्णन करना हो, तो कमल की उपमा से करते हैं।

उन्होंने अपने मुख से ऐसा कहा, तो मुख से नहीं कहेंगे, उन्होंने मुखारविन्द से कहा, अरविन्द का अर्थ है कमल। उन्होंने अपनी आंखो से देखा कमलनयन, आँख के लिए नयन और कमल जोड़ देते हैं। अपने हाथों में उद्घाटन किया। उन्होंने अपने चरण वहां रखे तो कहेंगे, उन्होंने चरणकमल वहां रखे। हर जगह कमल जोड़ रहे हैं। कमलनयन, करकमल, चरणकमल, मुखारविन्द सबमें कमल को जोड़ दिया जाता है।

कमल का जन्म तो कीचड़ में होता है, लेकिन कीचड़ में पड़ा नही रह जाता। उससे ऊपर उठकर खिल कर दिखाता है। ऊंचा उठ करके शोभायमान होता है। इसलिए कहते हैं कि जन्म तो भले की कीचड़ जैसे स्थान में हो जाए, लेकिन कीचड़ में पड़े रहना शोभा नहीं। कीचड़ से ऊपर उठ जाना, उसी में तुम्हारी शोभा है।

कमल से एक गुण और है-निर्लिप्त रहना। पानी की एक बूंद भी कमल के ऊपर गिरती है, तो मोती बनकर चमकने लगती है। मोती बनकर चमकने का मतलब है, पानी की बूंद को भी उसे शोभायमान कर दिया है। पानी अगर तालाब में ज्यादा ऊंचाई तक बढ़ जाए, तो कमल उससे ऊपर उठ जाता है।

दुनिया में इंसान के पास समर्थ्य, शक्ति, धन, वैभव, सत्ता, संपत्ति, सत्कार कितना भी कुछ बढ़ जाए लेकिन इन सबसे ऊपर उठा रहे। इन्हें अपने अन्दर न आने दे। अगर संकार की ये चीजें अन्दर आएंगी, तो अहंकार आएगा। अहंकार आएगा तो दूसरों को दबाने की कोशिश करेगा। तो भगवान से दूर हो जाएगा, अशान्तिका यह भी एक कारण बन जाएगा, संतो की वाणी है-

न दूर भूलो न जग भूलो रहो,
इस तरह जिंदगानी में,
जिस तरह कमल रहता है,
तलाब के बन्द पानी में।

न भगवान को भूलना, न संसार को भूलना, कमल की जड़ नीचे है लेकिन वास ऊंचाई पर है। तुम संसार के व्यवहार में भी रहना, लेकिन ध्यान ऊपर लगाए रहना, कमल बनकर जी सकते हो तो शोभायमान हो जाओगे।

कमल भगवान को अर्पित करना सबसे शुभ होता है। भगवान को प्रसन्न करने के लिए कमल अपर्ण किया जा सकता है। कमल जैसी जिसकी जिंदगी है, वही भगवान को अर्पित हो तो अच्छा है।

भंवरा कमल में आसक्ति के कारण पीड़ा भोगता है और कामसकि के कारण हाथी दुःख भोगता है। इसलिए भगवान दत्तात्रेय ने अपना पंद्रहवां गुरु हाथी को माना है। क्योंकि वह कामासक्त होकर, इतना बलशाली होने के बाद भी बंधन में

जातिगत जनगणना की मांग

-प्रमोद भार्गव

जाति आधारित जनगणना की मांग एकबार फिर सतह पर आ गई है। बिहार विधान सभा ने सर्वसम्पति से प्रस्ताव पारित कर केंद्र सरकार से २०२१ में होने वाली जनगणना जातीय आधार पर कराने की मांग की गयी है। प्रस्ताव लाते समय आश्चर्य की बात रही कि सभी जातीय भेदों को नकारते हुए बिना विवाद के प्रस्ताव पास कर दिया गया। ऐसा इसलिए संभव हुआ क्योंकि बिहार विधान सभा के चुनाव इसी साल के अंत में होने वाले हैं। वैसे, जातीय जनगणना की मांग कोई नई नहीं है। इसी वजह से २०११ को जनगणना के साथ अलग प्रारूप पर सामाजिक, आर्थिक और जाति आधारित जनगणना की गई थी किंतु मूल जनगणना के साथ की गई गिनती के आंकड़े न तो मनमोहन सिंह सरकार ने उजागर किए ार न ही नरेंद्र मोदी सरकार ने। जाति आधारित जनगणना की मांग करने वाले नेताओं का कहना है कि इसके निषर्क्ष से निकले आंकड़ों के आधार पर जिन जातियों की जितनी संख्या है, उस आधार पर कल्याणकारी योजनाओं के साथ सरकारी नौकरियों में आरक्षण का लाभ मिले। हमारे नीति-नियंताओं में दूरदृष्टि है तो पहले इस विषय पर राष्ट्रीय विमर्श कराए और फिर इससे निकले निष्कर्ष पर अमल करे। यह ऐसा मुद्दा है, जिसमें सतह पर तो खूबियां दिखाई देती है लेकिन अनेक डरावनी आसंकाएं भी इसके गर्भ में छिपी है। बृहत्तर हिन्दू समाज (हिन्दू, जैन, बौद्ध, सिख में जिस जातीय संरचना को ब्राह्मणवादी व्यवस्था का दुष्चक्र माना जाता है, हकीकत में यह व्यवस्था इतनी पुख्ता है कि इसकी तह में जाना मुश्किल है। मुस्लिम समाज में भी जातिप्रथा पर पर्दा डाला हुआ है। मुसलमानों की सौ से अधिक जातियों के बावजूद इनकी जनगणना में भी पहचान का आधार धर्म और लिंग है। शायद इसीलिए आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने कहा है कि 'जाति ब्रह्मणवादी व्यवस्था का कुछ ऐसा दुष्चक्र है कि हर जाति को अपनी जाति से छोटी जाति मिल जाती है। यह ब्राह्ममणवाद नहीं है, बल्कि पूरी की पूरी एक साइकिल है। अगर यह जातिचक्र सीधे रेखा में होता तो इसे तोड़ा जा सकता था। यह वर्तुलाकार है और इसका कोई अंत नहीं है। जब इससे मुक्ति का कोई उपाय नहीं है।' वैसे भी धर्म के बीज-संस्कार जिस तरह से हमारे बाल अवचेतन में, जन्मजात संस्कारों के रूप में बो दिए जाते हैं, कमोबेश उसी स्थिति में जातीय संस्कार भी नादान उम्र में उड़ेल दिए जाते हैं। इस तथ्य को नकारा नहीं जा सकता कि जाति एक चक्र है। यदि जाति चक्र न होती तो अबतक टूट गई होती। जाति पर जबरदस्त पुठारघात महाभारत काल के भौतिकवादी ऋषि चार्वाक ने किया था। उनका दर्शन था, 'इस अनंत संसार में कामदेव ही मूल है तो जाति की परिकल्पना किस लिए ? इसलिए संकीर्ण योनि होने से भी जातियां दुष्ट, दूषित या दोषग्रस्त ही हैं, इस कारण जाति एवं धर्म को छोड़कर स्वेच्छाचार का आचरण करो।' गौतम बुद्ध ने भी जो राजसत्ता भगवान के नाम से चलाई जाती थी, उसे धर्म से पृथक किया। बुद्ध धर्म, जाति और वर्णाश्रित राज व्यवस्था को तोड़कर समग्र भारतीय नागरिक समाज के लिए समान आचार संहिता प्रयोग में लाए। चाणक्य ने जन्म और जातिगत श्रेष्ठता को तिलांजलि देते हुए व्यक्तिगत योग्यता को मान्यता दी। गुरूनानक देव ने जातीय अवधारणा को अमान्य करते हुए राजसत्ता में धर्म के उपयोग को मानवाधिकारों का हनन माना। संत कबीरदास ने जातिवाद को ठेंगा दिखाते हुए कहा भी, 'जाति न पूछो साधु की, पूछ लीजियो ज्ञान। मोल करो तलवार का, पड़ी रहने दो म्यान।'

महात्मा गांधी के जाति प्रथा तोड़ने के प्रयास तो इतने अतुलनीय थे कि उन्होंने 'अछूतोद्धार' जैसे आंदोलन चलाकर भंगी का काम दिनचर्या में शामिल कर, उसे आचरण में आत्मसात किया। भगवान महावीर, संत रैदास, राजा राममोहन राव, दयानंद सर्स्वती, विवेकानंद, ज्योतिबा फुले, आम्बेडकर ने जाति व्यवस्था तोड़ने के अनेक प्रयत्न किए लेकिन जाति है कि मजबूत होती चली गई। इसी वजह यह रही कि कुलीन हिन्दू मानसिकता, जातितोड़क कोशिशों के समानांतर अवचेतन में पैठ जमाए मूल से अपनी जातीय अस्मिता और उसके भेद को लेकर लगातार संघर्ष करती रही। इसी मूल की प्रतिच्छाया हम पिछड़ों और दलितों में देख सकते हैं। मुख्यधारा में आने के बाद न पिछड़ा, पिछड़ा आने के बाद न पिछड़ा, पिछड़ा रह जाता है और न दलित, दलित। वह उन्हीं ब्राह्मणवादी हथकंडों को हथियार के रूप में इस्तेमाल करने लगता है, जो ब्राह्मणवादी व्यवस्था के हजारों साल के हथकंडे रहे हैं। नतीजतन जातीय संगठन और दल भी अस्तित्व में आ गए। जातिगत आरक्षण के संदर्भ में संविधान के अनुच्छेद १६ की जरूरतों को पूरा करने के लिए आरक्षण की व्यवस्था है। लेकिन आरक्षण किसी भी जाति के समग्र उत्थान का मूल कभी नहीं बन सकता ? आरक्षण के सामाजिक सरोकार केवल संसाधनों के बंटवारे और उपलब्ध के सामाजिक सरोकार केवल संसाधनों के बंटवारे और उपलब्ध अवसरों में भागीदारी से जुड़े हैं। इस आरक्षण की मांग शिक्षित बेरोजगारों को रोजगार और अब ग्रामीण अकुशल बेरोजगारों के लिए सरकारी योजनाओं में हिस्सेदारी से जुड़ गई। परंतु जबतक सरकार समावेशी आर्थिक नीतियों को अमल में लाकर आर्थिक नीतियों को अमल में लाकर आर्थिक रूप से कमजोर लोगों तक नहीं पहुंचती तबतक पिछड़ी या निम्न जाति अथवा आय के स्तर पर पिछले छोड़ पर बैठे व्यक्ति के जीवन स्तर में सुधार नहीं आ सकता। मुस्लिम धर्म के पैरोकार यह दुहाई देते हैं कि इस्लाम में जाति प्रथा की कोई गुंजाइस नहीं है।

జననీ జన్మభూమిశ్చ స్వర్గాదపి గరీయసీ

(... గత సంచిక తరువాయి...)

–డా॥ కోడూరి సుబ్బారావు

దక్షిణ భారతదేశంలో ఒక చిన్న రాజ్యముం డేది. అది 'హైదర్ అలీ' అనే మహ్మదీయ పాలకుని ఆధీనంలో ఉండేది. అతడు చాలా పరాక్రమవంతుడు. ఆంగ్లేయు లెంత ప్రయత్నిం చినా అతనిని అదుపులోకి తీసుకోలేక పోయారు. ఈ వర్తమానం ఇంగ్లాండుకు పంపగా అనేక యుద్ధాలలో ఆంగ్లేయులకు విజయాన్ని చేకూర్చిన 'మేజర్ కర్నల్ క్యూట్'ను నిపుణులైన మంచి సైనిక బలగాన్నిచ్చి మద్రాసు నగరానికి పంపారు హైదరాలీని జయించటం కర్నల్ క్యూట్ వల్ల కూడా కాకపోగా అతడే హైదరాలీకి బందీగా చిక్కిపోయాడు. హైదరాలీ అతనిని చంపటం కన్న మరిచిపోలేని విధంగా అవమానపరచి ఇంగ్లాండుకు తిరిగి పంపటం మంచిదను కున్నాడు. అతనిని దర్బారుకు రప్పించి అందరి ఎదుట అతని ముక్కు కోసివేసి మీ ఇంగ్లాండుకు పోయి హైదర్ ప్రతాపానికి సాక్షిగా అవమానంతో జీవించమని చెప్పి వదలి వేశాడు. ప్రాణాలు దక్కిం చుకోవడానికి క్యూట్ తెగిన ముక్కు రక్తం కారకుండా ఒక చేతపట్టు కొని మరొక చేతితో తెగిపడిన ముక్కు భాగాన్ని పట్టుకొని మద్రాసు నగరం వైపు పరుగులు తీశాడు. చూచిన జనమంతా హేళన చేస్తూ వుండగా ఎట్లో హైదరాలీరాజ్యాన్ని దాటి ఆంగ్లేయ శాసనంలో ఉన్న రాజ్యంలోకి చేరు కున్నాడు. అలా ఏడుస్తూ పరుగులు పెడుతూ ఒక గ్రామానికి చేరుకొని సేత తీర్చుకోసాగాడు. అతని ఈదీన పరిస్థితిని చూసి ఏమయ్యిందని ప్రజలడుగగా జరిగిన అవమానాన్ని దాచిపెట్టి ప్రమాదం వల్ల ముక్కు తెగిందని అబద్ధం చెప్పాడు. దారిలో ఒక వృద్ధునికి ఇతనిపై జాలి కలిగి మా ఊరిలో ఒక నాయీ వైద్యుడున్నాడు అతడు నీ ముక్కును అతకగలడని చెప్పి తీసుకు వెళ్ళాడు. ఆ నాయీ ఆయుర్వేద శస్త్ర చికిత్సలు తెలిసినవాడు. అందుచే ఓర్పుతో అతని వేరే శరీర భాగం నుండి కండను తీసి తెగినచోట పెట్టికుట్టి ముక్కగా తీర్చి దిద్దాడు. తదుపరి వాడుకోవలసిన మందులు ఇచ్చాడు. కర్నల్ కూట్ నాయీకి అనేక ధన్యవా దాలు చెప్పి మద్రాసుకు వెళ్ళిపోయాడు.

ఆ అద్భుత శస్త్ర చికిత్స 1½ గంటల సమయం పట్టిందని కర్నల్‌కూట్ తన జీవిత చరిత్రలో వ్రాసుకున్నాడు.

కొంతకాలం తరువాత కూట్ ఇంగ్లాండు దేశానికి వెళ్ళిపోయాడు. అక్కడ అతనికి ఒక పెద్ద సర్జన్‌తో స్నేహముంది. అతని దగ్గరకు వెళ్ళి "నీకు తెలిసిన శస్త్ర చికిత్స చాలా స్వల్పం మాత్రమే. భారతదేశంలో నీకన్న గొప్ప శస్త్ర చికిత్సకులున్నారు. వారి వద్ద నీవు నేర్చుకోవల సింది చాలా ఉంద"న్నాడు. దానికి ఆ వైద్యుడు ఆశ్చర్యపోయాడు. అనంతరం కూట్ జరిగిన వృత్తాంతమంతా వివరించి చెప్పాడు. ఆ సర్జన్ కర్నల్‌కూట్ ముక్కును జాగ్రత్తగా పరీక్షించి చూసి అతనన్నది సత్యమేనని అంగీకరించాడు. కొంత కాలం తరువాత ఆ సర్జన్ మన దేశానికి వచ్చి కొన్ని నెలలుండి ప్లాస్టిక్ సర్జరీకి చెందిన కొన్ని మెలకువలను నేర్చుకుని వెళ్ళాడు. అప్పటికి ఇంగ్లాండులో ప్లాస్టిక్ సర్జరీ లేకుండేది. ఆ సర్జన్ దానిని వారి దేశంలో ప్రవేశపెట్టాడు. దానితో పాశ్చాత్య వైద్యుల దృష్టి భారతీయ ఆయుర్వేదం వైపు మరలింది. చరక శుశ్రుతాది గ్రంథాల నాంగ్లంలోనికి అనువదింపజేయించుకొని అధ్యయనంచేశారు. ఎన్నెన్నో క్రొత్త విషయాలను గ్రహించారు.

భారతీయ ఆయుర్వేద వైద్యగ్రంథం సుశ్రు తసంహితలో శస్త్ర చికిత్సలే ఎక్కువగా చెప్పబ డ్డాయి. దానిలో సూత్రస్థానం 16వ అధ్యాయం 48 నుండి 53 శ్లోకాలలో నాసానుసంధాన విధి విధానాలున్నాయి. చివరంగా తెలిసికోగోరే వారు మా ప్రచురణ వేదాలలో 'అశ్వినీదేవతలు' చదువ గోరుచున్నాము. అంతటి గొప్ప వైద్య శస్త్ర శిల్ప ఖగోళ విద్యాదులు మన దేశంలో ఉండేవి. ఇవన్నీ గురుకులీయ పద్ధతిలోనే నడిచేవి. కనుక గురు కులాలను అణచివేస్తేకాని భారతజాతిని మన వశంలోకి కీసుకురాలేమని మెకాలే ఆంగ్ల ప్రభు త్వానికి సూచించాడు.

పూర్వం తెలిపినట్లుగా ఆంగ్లేయులు కుటిల రాజనీతిజ్ఞులు. యుక్తిగా వారనుకున్నది సాధించే వారు. వారు ముందు 'ఇండియన్ ఎడ్యూకేషన్ ఆక్ట్' అనే పేరుతో ఒక చట్టాన్ని తీసుకువచ్చారు. అనంతరం గురుకులాలన్నీ 'ఇల్లీగల్–చట్ట వ్యతి రేకమైన'వన్నారు. వాటికి ఆర్థికంగాగాని, వస్తు రూపంలోగాని సాయం చేయటం కూడా నేరమే నన్నారు. మేమే పాఠ శాలలు పెట్టి మీకు వివిధ విద్యలతోబాటు ఆంగ్లం నేర్పుతామన్నారు. డిగ్రీలు ఇచ్చి ఉద్యో గాలిస్తామన్నారు. దానితో క్రమంగా గురు కులాలు మూతపడ్డాయి. ఇంతే గాక, బెంగాల్‌లో కాన్వెంటు స్కూల్స్ ప్రారంభిం చారు. క్రైస్తవాన్ని నూరిపోయటానికి ప్రయత్నిం చారు. ప్రారంభంలో ఆ ప్రాంత ప్రజలు తీవ్రంగా వ్యతిరేకించారు. కాని, రాజా రాంమోహనరాయులు మొదలైనకొందరు వారికి సహకరించటం వల్ల కాన్వెంట్లు పెట్టగలి గారు. రాజా రాంమోహన రాయులు సతీసహ గమన దురాచారాన్ని పోగొట్ట యత్నించిన మహానుభావుడేకాని, బహు భార్య త్వాన్ని ప్రోత్సహించాడు. అతడే చాలామంది భార్యలను కలిగివుండేవాడని చెబుతారు. ఇంతే గాక, ఇతనికి పాశ్చాత్య సంస్కృతీ సభ్యతలపైన మక్కువుండేది. మన భారతీయ సాంప్రదా యాల కన్న అవే మిన్నగా భావించేవాడు. ఫలితంగా మనకు గొప్ప నష్టమే జరిగింది. అసలు సతీసహ గమనం మన వైదికాచారం కానేకాదు. రామా యణ కాలంలో దశరథ మహారాజు చనిపోయిన తదుపరి ఆయన భార్యలెవ్వరూ సతీసహగమనం చెయ్యలేదు. భారతకాలంలో పాండురాజు చని పోయిన తరువాత కుంతీదేవి సహగమనం చెయ్యలేదు. ఈ దురాచారం మధ్యకాలంలో దుష్ట గురువుల ఉపదేశాలవల్ల వచ్చినదే.

కాన్వెంటు స్కూళ్ళలో చదువుకొన్నవారు శిఖా యజ్ఞోపవీతాలను తొలగించుకొని పాశ్చాత్య వేష భూషలను ధరించటానికి అలవాటుపడ్డారు. మన హేతుబద్ధమైన వైజ్ఞానిక మైన సదాచారాల పట్ల హేయభావాన్ని పెంచు కొన్నారు. వైదశాస్త్రాలకన్న బైబిలే గొప్ప గ్రంథంగా, భారతీయ చరిత్ర, సాహిత్యాలకన్నా ఆంగ్ల చరిత్ర, సాహిత్యాలే మిన్నగా భావించ సాగారు. లార్డ్‌మెకాలే గవర్నర్ జనరల్ విలియం బెంటిక్ ద్వారా ఇంగ్లాండుకు పంపిన సందేశంలో, "We must do our best to form a class who may be interprets between us and the millions whom we govern a class of persons Indians in blood and colour, but English in taste, in opinions, words and intellect"
- Macaulay's minute of 1835.

మనచే పాలింపబడుచున్న కోట్లాది సామాన్య భారతీయులకును మనకును మధ్య ఒక అభిప్రా యాలు మరొకరికి తెల్పటానికి ఒక విద్యావంతు లవర్గం అవసరం. అటు వంటి వర్గాన్ని తయారు చేయటానికి మనం శాయశక్తులా యత్నించాలి. ఆ వర్గం వారు

రక్తంలో మరియు రంగులో భారతీయులై యుండికూడా తమ అభిరుచి, భాష, భావము, ఆలోచన, ఆచరణలలో ఆంగ్లేయులై యుండాలి" అనే సంకల్పం-కోరిక వాగ్దానం నెరవేరాయి. ఆ సంతోషాన్ని లార్డ్ మెకాలే ఇంగ్లాండులో వున్న తన తండ్రికి ఉత్తరం వ్రాస్తూ దానిలో ఈవిధంగా తన సఫలత వ్యక్తపరచాడు.

"No Hindu, who has received English education, ever remains sincerely attached to his religion. Some continue to profess it as a matter of policy, but many profess themselves pure theists and some embace Christianity. It is my firm belief that is our plans of education are followed up, there will not be a single idolator among the respectable classes in Bengal thirty years hence"

ఈ ప్రసంగ భావమేమంటే- "ఆంగ్ల విద్య నభ్యసించిన ఏ హిందూవూ తన మతానికి ఎన్నడూ కట్టుబడి ఉండదు. కొందరు తమ మత కర్మకాండను మొక్కుబడిగా ఆచరిస్తే అనేకులు క్రైస్తవ మతాన్ని స్వీకరిస్తారు. పలువురు తమను ఏకేశ్వర వాదులుగా పేర్కొంటారు. మన విద్యా పథకాలు పటిష్టంగా పాటింపబడితే రాబోవు 30 సంవత్సరాలలో బెంగాల్‌లో ఉన్నత కులాల వారిలో ఒక్కమూర్తి పూజకూడ ఉండబోదని నేను గట్టిగా విశ్వసిస్తున్నాను."

ఇది సుమారు 170 సంవత్సరాల క్రిందట వ్రాసిన ఉత్తరం. ఇది ఇప్పటికీ ఆంగ్లేయుల రికార్డులలో ఉన్నదట. హిందువులు అనబడే ఆర్యుల మైన మనం ఏకేశ్వరునే నమ్ముతాము. మన వేదాలు, దర్శన ఉపనిషదాదులు పరమేశ్వరుడు ఒకే ఒక్కడనియూ, అతడు సర్వ వ్యాపకుడు సర్వ జ్ఞుడు సర్వశక్తిమంతుడు ననియు చెబుతుంయి. సృష్ట్యాది నుండి మహాభారతకాలం వరకు ఆర్యులు సంధ్యా వందన జపధ్యానాదులతోనే పరమేశ్వరుని సేవించేవారు. అనంతరం వచ్చిన పురాణాల వలననే అనేక దేవీదేవతల కల్పన, పూజలు వ్రతాలు దీక్షలు మొదలైనాయి. దానితో దేవుళ్ళు అనేకులనే భావం స్థిరపడిపోయింది. ఇదియును మన దేశ అవనీతికి మరొక కారణం.

కొంతకాలం శైవ వైష్ణవ శాక్తేయాది సాంప్రదాయాలవారు పరస్పరం ద్వేషించుకోవటం కొట్టుకోవటం తిట్టుకోవటం వంటివి జరిగాయని మన ప్రాచీన చరిత్ర చెబుతున్నది. సాంప్రదాయా లపేరుతో కొన్ని యుద్ధాలు జరిగాయట. ఇప్పుడు అటువంటివి ప్రత్యక్షంగా కనబడకపోయినా మా దేవుడే గొప్ప అనే భావాలు అంతర్గతంగా అందరి లోనూ ఉన్నాయి. అందువల్లనే భారతీయులలో ఐక్యత తీసుకురావటం కష్టమౌతున్నది. ఇంతగా జ్ఞానవిజ్ఞానాలు పెరిగినా దేవుడు ఎవరు ? ఎవరిని దేవుడు అనాలి ? అనే విషయంలో సాంప్రదాయకులకు స్పష్టమైన అభిప్రాయం లేకుండా పోయింది. సృష్టి స్థితి ప్రళయాలు మూటినీ చేసే ఒకే ఒక కర్త ఉంటాడనీ, అతడినే దేవుడనాలనీ, బ్రహ్మ విష్ణు మహేశ్వరాది నామాలన్నీ (పేర్లన్నీ) ఆ ఏకాక దేవునికి విశేషణా లేననీ ఘోషించే మన వేదాల ఉపనిషత్తుల మాటలు ఇప్పటకీ తలకెక్కటం లేదు. స్మార్త ఏకాదశియని కొందరు, వైష్ణవేకాదశి యని కొందరు వేరు వేరు దినాలలో జరుపు కుంటున్నారేకాని ఒకే దినమున జరుపుకోలేక పోతున్నారు. శివ, విష్ణు పదములు రెండూ ఒకే దేవునకు చెందినవని గ్రహించలేక పోతున్నారు. **"ఏకం సత్ విప్రా బహుధావదన్ని అగ్నిం యమం మాతరిశ్వాన మాహుః** (ఋగ్వేదం 1-164-46) అనే వేద వచనాలు కాని **"స బ్రహ్మా స విష్ణుః న రుద్రః స శివః** (కైవల్యోపనిషత్ 1-8)" అనే ఉపనిషద్ వాక్యాలు గాని వారికింకా అర్థం కావటం లేదు. ఇప్పటికైనా వివేకవంతులు మేల్కొని ఒకే దేవున్నీ, ఒకే ఆరాధనా పద్ధతినీ ప్రచారం చెయ్యటానికి నడుం కట్టుకోవాలి. అదే మనల్ని సంఘటిత పరచి అన్ని రంగాలలోను అగ్రగామిని చేస్తుంది.

మాతృభాషాభిమానం

పై ప్రయత్నంతోబాటు మనం ఆంగ్లషావ్యామోహాన్ని తగ్గించుకొని మన మాతృభాషపైన, దేశంలో ఎక్కువమందికి తెలిపిన హిందీ భాషపైన, భాషలన్నిటికి మూలభాషయైన మన సంస్కృత భాషపైనా అభిమానం పెంచుకోవటం మంచిది. మాతృభాషలలో సైన్స్ ఎండ్ టెక్నాలజీ కూడా చదువుకోవచ్చును. భాషావేత్తలు చెప్పేదేమంటే- మాతృభాషలో అర్థం చేసుకున్నంత బాగా ఆంగ్ల భాషలోగాని, వేరే విదేశీభాషలలో గాని అర్థం చేసుకోలేము. ఏదైనా లోతుగా ఆలోచించాలన్నా మాతృభాషలోనే ఆ పని సుసాధ్యమౌతుంది. ప్రపంచంలో మొత్తం దేశాల సంఖ్య సుమారు రెండువందల యితే వాటిలో 12 దేశాలు మాత్రమే ఇంగ్లీషును బోధనా భాషగాను, వ్యవహా రభాషగాను కలిగివున్నాయి. జపాన్, ఫ్రాన్స్, జర్మనీ, రష్యా వంటి సాంకేతికంగా అభివృద్ధి చెందిన దేశాల్లో వారి మాతృభాషలోనే బోధన (టీచింగ్) జరుగుతున్నది. అటువంటి వారెన్నో నోబుల్ బహుమతులు పొందటం జరుగుతున్నది కదా ! మనదేశం ఇంతవరకు 2 నోబుల్ బహుమతులను మాత్రమే పొందింది. అవియును బెంగాలీ భాషలో వ్రాసిన కావ్యాలవలననే. శ్రీ రవీంద్రనాథ్ ఠాగూర్ గారు 'గీతాంజలి' వారి మాతృభాష బెంగాలీలోనే వ్రాశారు. అట్లే. శ్రీ జగదీశ చంద్రబోస్ గారు తమ వైజ్ఞానిక వ్యాసాలను (థీసిస్‌ను) బెంగాలీలోనే వ్రాశారు. ఇంగ్లీషులో కాదు.

మన సంస్కృతభాష ప్రపంచ భాషలలోనే తలమానికమైనది. అందులో ఉన్నన్ని ఎక్కువ పదములు మరే భాషలోనూ లేవు. ఇంగ్లీషు పదముల సంఖ్య చాలా స్వల్పం. దానిలోని లాటిన్ గ్రీకు పదములను వేరుచేస్తే అది ఇంకా సంకుచితమైపోతుంది. లాటిన్ గ్రీకు పదములకు మూలం మన సంస్కృతమే. సంస్కృతం ధ్వన్యా త్మక భాష. ఎలా వ్రాస్తామో అలానే చదువుతాము ఇంగ్లీషు అలా కాదు. వ్రాసేది ఒక రకంగా పలికేది మరొక రకంగా. ఒక పదములోని అక్షరం ఒకరకంగా పలికితే మరొక పదములోని అదే అక్షరాన్ని మరొక రకంగా పలకాలి. కంప్యూ ర్ విశేషజ్ఞులు సంస్కృతమే కంప్యూటర్‌కు ఎక్కువ అనుకూలంగా ఉందంటున్నారు.

సంస్కృతం నేర్చుకోవటం వల్ల మనకు కలిగే గొప్ప ప్రయోజనమేమంటే మన ప్రాచీన వైద్య ఖగోళ గణిత భౌతిక రాసాయనాది శాస్త్రాలన్నీ సంస్కృతంలోనే ఉన్నాయి. ఇంతే గాక, అవి చాలా ఉన్నతమైన వైజ్ఞానిక విషయాలను కలిగి వున్నాయి. అపారమైన మన సంస్కృత సాహి త్యాన్ని విదేశీయులెంత కాల్చి భస్మంచేసినా ఇంకా ఎన్నో గ్రంథాలు జీవించి ఉన్నాయి. మన వైద్య గ్రంథం సుశ్రుతంలో ఒక తలవెంట్రుకను నిలువుగా రెండు సమాన భాగాలుగా చేయగల సునిశిత పరికరాలు వర్ణింపబడి ఉన్నాయి. భర ద్వాజ మహర్షి వ్రాసిన బృహద్ విమానశాస్త్రంలో నేటికిని అందుకోలేని విచిత్ర విమానాల వర్ణన ఉంది. కేవలం సూర్యకిరణాలే ఇంధనంగా నడిచే విమానాల వర్ణనయూ కనబడుతుంది. వాటిని అధ్యయనం చేసి పరిశోధనలు చేయాలంటే సంస్కృతం నేర్చుకోవాలి కదా ! సంస్కృత భాషలోని ఆధ్యాత్మికవిజ్ఞానం భౌతికవిజ్ఞానం

కన్న మరెన్నో రెట్లు గొప్పది. మన వేదాలలోను ఉప నిషత్తులలోను దర్శనాలలోను ఆత్మ పరమా త్మలను గురించి వివరించినట్లు ప్రపంచంలోని మరే ఇతర మత గ్రంథాలలోను కనబడదు. ఆధ్యాత్మిక జ్ఞానమే మనకు సమస్త దుఃఖాల నుండి విముక్తిని కలిగించి పరమశాంతిని, పరమ సుఖాన్ని కలిగిస్తుంది. ఈ విధంగా సంస్కృత భాషవల్ల బహుళ ప్రయోజనాలు న్నాయి. కనుక అందరూ సంస్కృతం అభ్యసించటం మంచిది.

సృష్ట్యాది నుండి కోట్ల సంవత్సరాలు ప్రపంచ సామ్రాజ్ఞిగా వినుతికెక్కిన మన భారతమాత దుర దృష్టవశాత్తు సుమారు 500 సంవత్సరాలు విదేశీయుల పాలనలో విమతస్థుల పాలనలో పైవిధంగా పెక్కు ఇక్కట్లకు గురి అయ్యింది. తన ప్రాచీన వైభవాన్ని కోల్పోయి కళావిహీనమై దీన వదనంతో ఎప్పటికైనా తన పుత్రులు తనను కాపాడకపోతారా అని ఎదురుచూచింది.

స్వాతంత్ర్య సిద్ధి

మన భరతమాతను విదేశీయుల చెరనుండి విడిపించటానికి ఎందరెందరో మహాను భావులు ఎన్నెన్నో త్యాగాలు చేశారు. క్రీ.శ. 1857లో తాంత్యాతోపే, ఝాన్సీ లక్ష్మీబాయి లతో ప్రారంభ మైన మన స్వాతంత్ర్య సంగ్రామం 1947లో ముగిసి ఆగష్టు 15వ తేదీన మనకు స్వాతంత్ర్య ఫలాన్ని సిద్ధింప చేసింది. ప్రతీ సంవత్సరం ఆనందోత్సాహాలతో ఆ దినాన్ని (ఆగష్టు 15ని) పండుగగా జరుపు కుంటున్నాము. అసువులు బాసిన బలిదాన వీరులకు జోహారు లర్పిస్తు న్నాము. అందు లోనూ కుహనా రాజకీయాలే రాజ్యం చేస్తు న్నాయి. కొందరికే ఘనంగా నివాళులర్పించ డం కొందరిని నామమాత్రంగా తలంచటం జరుగుతోంది. కొందరిని పూర్తిగా విస్మరించ డమూ జరుగుతోంది.

నిద్రపోతున్న సింహాలవంటి భారతీయు లను తట్టిలేపి, వారి ప్రాచీన వైభవాన్ని గుర్తుచేసి, వారి నరనాడులలో క్షమిఇఃచరాని నేరం కాదా ! ఎవరా అది పురుషుడు ? అతడే **మహర్షి దయానందుడు.**

మహర్షి దయానందుడు (1824–1883) తన రచనలలో ప్రవచనాలలో భారతదేశ ప్రాచీన వైభవాన్ని, వీరత్వాన్ని, పరాక్రమాన్ని గుర్తు చేస్తూ స్వాతంత్ర్య పోరాటానికి ప్రేరణ నిచ్చేవాడు. కొంతకాలం అజ్ఞాతంగా గడపి సైనికుల గుడా రాలలో దేశభక్తులను ప్రేరేపించాడు. దాని ఫలితమే ప్రథమ స్వాతంత్ర్య సంగ్రామం. రాజ పుత్రుల రక్తంలో ప్రాచీన రాజసం వంశపారం పర్యంగా (జీన్స్ ద్వారా) ప్రవహిస్తున్నదనే ఆశతో రాజపుత్ర రాజులకు తాను అతిథిగా వెళ్ళి వారికి రాజధ ర్మాలను, సదాచారాన్ని, దేశభక్తిని, స్వాతం త్ర్యకాంక్షను బోధించ విశేషంగా ప్రయత్నించాడు. ఆనాటి భారతదేశ దుస్థితికి విలపిస్తూ గంగా తీరాలలో అనేక రాత్రులు గడిపాడు. ఆంగ్లేయ ఫాదరీల, గవర్నరుల ఎదుటనేవారి మతాలలోని లోపాలను, పరిపాలనలోని లోపాలను నిర్భ యంగా ఎత్తి చూపాడు. వైదిక ధర్మంలోని వైశిష్ట తను ఎలుగెత్తి చాటాడు. మహర్షి తన అమరగ్రం థమైన 'సత్యార్థ ప్రకాశం'లో ప్రసంగవశమున ఈ విధంగా వ్రాశారు.

"ఎవరెంత చేసినా స్వదేశీయ రాజ్యామే సర్వకాలాలలోను ఉత్తమ మనుట స్పష్టము. ఇక మత మతాంతరాల మూర్ఖపు పట్టుదల గానీ, స్వ పర పక్షపాతముగానీ లేక ప్రజల యందు తల్లిగంద్రులవంటి కృపకలిగి దయా న్యాయ ములతో కూడి యున్నను విదేశీయుల రాజ్యము సంపూర్ణ సుఖదాయకము కానేరదు" అని వ్రాశారు. దీనిని బట్టి వారి స్వాతంత్ర్యేచ్ఛ ఎంత గాఢమైనదో, ఉన్నతమైనదో అర్థమౌ తున్నది.

నేడు 'స్వాతంత్ర్య' పద జన్మదాతగా కీర్తింప బడే దాదాబాయినౌరోజీకన్న పూర్వమే మహర్షి దయానందుడు ఈ పదమును తన ప్రవచ నాలలో, గ్రంథాలలో, వేదభాష్యంలో ప్రయో గించినట్లు అనేక ఆధారాలున్నాయి. లోకమాన్య బాల గంగాధర తిలక్ ఒకచోట మహర్షి దయా నందుని గూర్చిన తన భావాన్ని వ్యక్తపరుస్తూ "దయానంద మహర్షి భారతీయాకాశాన తన యలౌకిక ప్రకాశంతో ప్రకాశించే జ్యాజ్వల్య మానమైన నక్షత్రం, అతడు గాఢనిద్రాముద్రిత మైన భారతాన్ని మేల్కొల్పినవాడు. 'స్వరాజ్య సందేశ వాహకులలో నతడే సర్వప్రథ ముడు. అతడు మానవత నుపాసించిన మహనీ యు"డని అన్నాడు.

ఆ 'స్వరాజ్య' పదమే బాలగంగాధర తిలక్ హృదయంలో మారుమ్రోగి **'స్వాతంత్ర్యం నా జన్మ హక్కు'** అనే నినాదానికి ప్రేరణ నచ్చింది. తదుపరి ఆ పదమే భారతీయులకు కొన్ని హక్కుల కోసం పోరాడటానికి ఏర్పడిన కాంగ్రెస్‌కు నినాద మయ్యింది. మహర్షి దయా నందుని ఆ ప్రేరణయే లేకుండే 'స్వాతంత్ర్య' పదముగాని, దానిని పొందు అభిలాషగాని కాంగ్రెస్‌కు ఎప్పటికి కలిగేదో ఊహా తీతము. అనంతరకాలంలో ఆ 'స్వాతంత్ర్య' పదమే భారతీయులకు జపమంత్ర మయ్యింది. అదే మత మతాంతర సాంప్రదాయాల నేకంచేసి భారతజాతిని సంఘటితం చేసింది. కాని ఫలితమే 1947లో లభించిన స్వాతంత్ర్యసిద్ధి.

మహర్షి దయానందుని అనుయాయులైన ఆర్య సమాజికులే స్వాతంత్ర్య పోరాటంలో ప్రము ఖపాత్ర నిర్వహించారు. లాలా లజపతి రాయ్, స్వామీ శ్రద్ధానంద్ దయానంద మహర్షికి అనన్య భక్తులు. మహర్షి ప్రేరణతోనే శాంజీ కృష్ణవర్మ ఇంగ్లాండు చేరుకొని అచట భారతీయ విద్యార్థు లకు వ్యవస్థచేస్తూ భారతీయులలో స్వాతంత్ర్యే చ్ఛను జ్వలింప చేశారు. దాని ఫలితంగానే సర్దార్ భగత్‌సింగ్, చంద్రశేఖర్ ఆజాద్ వంటి విప్లవవీరులు ఉదయించారు.

శ్రీ భోగరాజు పట్టాభి సీతారామయ్య గారు తమ "కాంగ్రెస్ చరిత్ర" అనే గ్రంథంలో ఈ సత్యాన్ని ప్రకటిస్తూ ఈ విధంగా వ్రాశారు– "నాటి సహాయ నిరాకరణ మొదలైన ఉద్యమా లలో పాల్గొన్న వారిలో 80 శాతం మంది ఆర్య సమాజీయులో లేక మహర్షి దయానం దుని గ్రంథాల పఠనంతో ప్రేరితులైనవారో యుండి" రని వ్రాశారు.

ఈ విషయాన్నే ప్రముఖ స్వాతంత్ర్య సమర యోధుడు వీర సావర్కర్ చక్కగా వివరించారు– "దయానంద మహర్షి స్వాతంత్ర్య సంగ్రామంలో ప్రథమ యోధుడు. హిందూజాతిని రక్షించిన వాడు. మహర్షి స్థాపిత 'ఆర్య సమాజం' రాష్ట్రా నికి (దేశానికి) గొప్ప సేవచేసింది. చేస్తున్నది. స్వాతంత్ర్యసంగ్రామంలో ఆర్య సమాజికులే ఎక్కువగా పాల్గొన్నారు. మహర్షి లిఖిత 'సత్యార్థ ప్రకాశం' హిందూజాతి నరనాడులలో ఉష్ణ రక్తాన్ని సంచారంచేయిస్తుంది. సత్యార్థ ప్రకాశ మున్నంత వరకు విధర్మియైన సాంప్రదాయకు డెవ్వడును తన బడాయిని ప్రదర్శింపలేడు" అని కొనియా డారు.

30-3-1919 నాడు ఢిల్లీలో జరిగిన రౌలత్ చట్ట వ్యతిరేక ప్రదర్శనలో భారీ సంఖ్యలో పాల్గొన్న ఆందోళనకారులను చెదరగొట్టడానికి ఆంగ్లేయ సైనికులు తుపాకులు గురిపెట్టి గుండ్ల వర్షం కురిపించ ఉద్యక్తులైనప్పుడు దయానంద మహర్షి శిష్యుడైన స్వామీ శ్రద్ధానందుడే ఎదురొడ్డి నిలచాడు. వారి తుపాకుల ఎదుట తన ఛాతీని చూపిస్తూ "మందు నాపైన గుండ్లు

కురిపించండి. నా ఛాతీ జల్లెడవలె తూట్లు పడిన తరువాతనే మీరు ఆందోళనకారులపై ప్రయోగించగలరు. అంతవరకు నేనడ్డు కుంటా'' నన్నాడు. దానితో ఆంగ్లేయులు భయపడి వెనకకు తగ్గారు. పెను ప్రమాదమే తప్పింది.

30-10-1928 నాడు లాహోర్‌లో సైమన్ కమీషన్‌ను వ్యతిరేకించిన ఆందోళనకారులకు నాయకత్వం వహించిన పంజాబ్ కేసరి లాలా లజపతిరాయ్ ఆర్య సమాజ నేతయే. ఆనాడు ఆంగ్ల సైనికుల లాఠీలు ఆయనపై పడినంతగా ఎవరిపైనా పడలేదు. ఆ దెబ్బల ప్రభావంతోనే ఆయన వీరగతిని పొందటం జరిగింది. ఈ దుర్ఘ టనతోనే సర్దార్ భగత్‌సింగ్ ప్రభావితుడై ప్రతీ కారం తీర్చుకొన ప్రతిజ్ఞపూనాడు. ప్రతిజ్ఞ నెరవే ర్చుకొని చిరునవ్వుతో ఉరికంబమెక్కాడు.

ఎప్పుడైతే గదర్‌పార్టీ నేత భాయీ పరమా నందకు ఆంగ్లేయులు ఉరిశిక్ష వేశారో అప్పుడే ప్రతీకారం తీర్చుకొన ప్రతిజ్ఞపూనిన రాంప్రసాద్ బిస్మిల్ కూడా ఆర్య సమాజీయుడే. ఒక ప్రక్క ఆర్య సమాజం వైదిక సంస్కృతిని రక్షించటం కోసం, భారతదేశాన్ని స్వాతంత్ర్యం చెయ్యటం కోసం ప్రాణాలర్పించే క్రాంతికారులను తయారు చేయగా మరో ప్రక్క డా॥ హెడ్గేవార్ భారతీయులను సంఘటిత పరచి రాష్ట్రీయ స్వయంసేవకులను (ఆర్.యస్.యస్.)ను నిర్మించారు. ఈ రెండు సంస్థల సేవలను మహా త్మాగాంధీ గారు గుర్తించటమూ జరిగింది.

ఆర్య సమాజికులు, హిందూవాదులు స్వదేశీ సంస్థల ద్వారా స్వాతంత్ర్య సాధనకు పూనుకుంటే గాంధీ మహాత్ముడు ఒక ఆంగ్లేయుడు స్థాపించిన 'ఇండియన్ నేషనల్ కాంగ్రెస్' ద్వారా ఉద్యమం సాగించాడు. ఐకమత్యంతో పోరాడటమే మంచి దనుకొని తదుపరి స్వామీ శ్రద్ధానందుడు, లాలా లజపతి రాయ్ మొదలైన ఆర్య ప్రముఖులు కాంగ్రె స్‌సంస్థలో సదస్యులై మహాత్మాగాంధీకి బలాన్ని చేకూర్చారు. క్రమంగా అనేకులు కాంగ్రెస్‌లో చేరి కలిసిపోరాడారు.

సర్దార్ వల్లభాయిపటేల్, పం. మోతీలాల్ నెహ్రూ, జవహర్‌లాల్ నెహ్రూ, శ్రీమతి సరోజినీ నాయుడు, పం. మదనమోహన మాలవ్య, లాల్ బహదూర్ శాస్త్రి, చౌ. లాల్‌సింహ, కేహర సింహ, చౌ. చరణ్ సింహ్ మొదలైన అనేకమంది దేశ భక్తులు స్వతంత్ర్య సంగ్రామంలోకి దూకారు. మౌలానా అబుల్ కలామ్, ఖాన్ అబ్దుల్ గఫార్ ఖాన్ మొదలైన ముస్లిమ్ నాయకులు కూడా సంగ్రామంలో చేరి ఆంగ్లేయుల అత్యాచారాల నెదిరించారు.

అందరూ 'ఇండియన్ నేషనల్ కాంగ్రెస్' లో చేరటంతో కాంగ్రెస్ బలం పెరిగింది. అయినప్ప టికి దానిలో నరమ్‌దళ్, గరమ్‌దళ్ అని రెండు వర్గాలుండేవి. నరమ్‌దళ్ వారు గాంధీ మహాత్ముని అహింసా మార్గంలో మాత్రమే ఆందోళన చెయ్యా లనేవారు. గరమ్‌దళ్‌వారు అవసరమైతే శత్రువుల నెదిరించాలనేవారు. నేతాజీ సుభాష్‌చంద్రబోస్, అల్లూరి సీతారామరాజు, శ్యాంజీ కృష్ణవర్మ మొద లైన ఉత్సాహ పరులంతా గరమ్‌దళ్‌వైపే మ్రొగ్గు చూపేవారు. వారి సంఖ్యాబలమే ఎక్కువ ఉండేది అయినా ఐకమత్యంతో గాంధీగారిని అనుసరించే వారు.

1942 ఆగష్టు నెలలో ఆంగ్ల ప్రభుత్వం అహింసాయుతంగా పోరాటం చేసే ఆందోళన కారులను శాశ్వతంగా అణచివెయ్యాలని గట్టిగా సంకల్పించింది. అనేకమంది గాంధేయవాదు లను తుపాకీగుండ్లతో కాల్చివేసింది. చనిపో యిన వరారైపోయినవారి స్త్రీలతో ఆంగ్లసైనికులు దుష్క ర్మలుచేయ నారంభిం చారు. సహనం కోల్పోయిన భారతీయులు కొందరు తిరగబడ్డారు. ఫలితంగా చాలా జననష్టమే జరిగింది. అప్పుడే శ్యాంజీ కృష్ణవర్మ, రాజా మహేంద్రప్రతాప్, సుభాష్ చంద్రబోస్ మొదలైనవారు దేశం బయటకు వెళ్ళి పోయి, బైటనుండి యుద్ధం చేయ యత్నించారు. 1943 సం॥ జనవరిలో సుభాష్ చంద్రబోస్ దేశాన్ని విడచి కాబూల్ మీదుగా జపాన్‌కు వెళ్ళారు. జపాన్ జర్మనీ దేశాల వారి సహకా రంతో అచట 'ఆజాద్ హింద్ ఫౌజ్' నిర్మాణం చెయ్యడం జరిగింది.

నేతాజీ సుభాష్ చంద్రబోస్ చేసిన ఆ ప్రయత్నం చాలా ప్రశంసనీయమైనది. శ్లాఘించ తగింది. దానివల్ల చాలా సఫలతయే జరిగినదని చెప్పవచ్చు. 'ఆజాద్ హింద్ ఫౌజ్' 'ఛలో ఢిల్లీ' అనే నినాదంతో మయన్మార్ (బర్మా) మీదుగా ఢిల్లీ సమీపిస్తూండగా దురదృష్టవశాత్తు రెండవ ప్రపంచ యుద్ధంలో జపాన్, జర్మనీ దేశాలు తీవ్రంగా నష్టపోవటంవల్ల చేసేదిలేక 'ఆజాద్ హింద్ ఫౌజ్' వెనుకకు మరలివెళ్ళవలసి వచ్చింది గ్రంథ విస్తరణ భీతిచే ఆ విషయాల నిచట వివరించలేక పోవుచున్నాము. తెలుసు కోగోరువారు 'నవయుగ భారతీ' వారి ప్రచుర ణలు 'స్వాతంత్ర్య సమరజ్వాలలు, 'హిందూ విజయ దుందుభి' మొదలైన గ్రంథాలు చదవండి. సాహిత్య నికేతన్, కేశవ నిలయం, బర్కత్‌పుర, హైదరాబాద్-500 027 నందు లభించగలవు.

మన ఆంధ్రులు అల్లూరి సీతారామరాజు, ఉయ్యాలవాడ నరసింహారెడ్డి మొదలైనవారు అనుసరించినదీ విప్లవ మార్గమే. ఆ మార్గంలో మనం స్వరాజ్యాన్ని పొందివుంటే మనలో జపాన్, జర్మనీ వారివలె దేశభక్తి మెండుగా ఉండేది. 'రాజ్యం వీరభోజ్యం' అన్నారు పెద్దలు. యాచించి సంపాదించిన దానిపైకన్నా పోరాడి సంపాదించు కున్న దానిపై శ్రద్ధా భక్తులెక్కువగా ఉంటాయి. కొందరు చారిత్రిక విశ్లేషకుల అభిప్రాయమే మంటే -'ఆనాటి విప్లవకారుల సహసాలకే ఆంగ్లేయులు భయపడి దేశాన్ని వదలివెళ్ళారు కాని అహింసావాదులకు వెరచికా' దని. ఏది ఏమైనా అందరి సామూ హిక ప్రయ త్నంతో 15-8-1947న మనకు స్వాతంత్ర్యం లభిం చింది. ఎవరెంత చేసినా పోరాట చివరిదశలో ఉద్యమానికి సారథ్యం వహించిన గాంధీ మహా త్మునికే ఆకీర్తి దక్కింది. ఆయనకు, ఆయన అను యాయులైన ఒక వర్గానికే ఆ గుర్తింపు, పేరు ప్రఖ్యాతులు లభించాయి. తద్భిన్నమైనవారు ఎంత దేశభక్తు లైనా, ఎన్నెన్ని త్యాగాలు చేసినా నామమా త్రులైనారు. అందు ప్రథమ ప్రేరకుడైన మహర్షి దయానందునకు అసలు గుర్తింపే లేకుండా పోయింది. ఇది కృతఘ్నత కాదా ?

మనకు 1947లో స్వాతంత్ర్యం వచ్చినా కొంతకాలం శాంతి లెకుండాపోయింది. మహ్మ దాలీజిన్నా ముస్లిమ్‌లకు ప్రత్యేక దేశం సావాలని మొండిగా పట్టుపట్టడం వల్లా, వంగ్లేయుల కుటిల రాజనీతివల్లా భారతదేశం హిందూస్తాన్, పాకి స్థాన్ అనే రెండు దేశాలుగా విడిపోయింది. దానితో పాకిస్థాన్ ప్రాంతంలోని హిందువులు పెక్కు యిక్కట్లకు గురియయ్యారు. మానవ మారణహోమం జరిగింది. పెక్కుమంది ప్రాణాల రచేతబట్టుకుని కాందిశీకులుగా భారతదేశానికి రావలసి వచ్చింది. హిందూస్థాన్ లోని ముస్లిమ్‌లు పాకిస్థాన్‌కు పోవలసివుంది. కాని, మహాత్మా గాంధీ వివేకంలేని ఉదార బుద్ధితో హిందూస్థాని సెక్యులర్ స్టేట్‌గా ప్రకటించి ముస్లిమ్‌ల నందరిని యిచ్చటనే నిలిపివేశారు. దాని ఫలితం మీ అందరికి తెలిసిందే.

ఆంగ్లేయుల చివరి వైస్‌రాయ్ లార్డ్‌మౌంట్ బాటన్ 29-6-1948వ తేదీన భారతదేశాన్ని వదలిపెట్టి ఇంగ్లాండుకు వెళ్ళిపోయాడు. అనంతరం కొంతకాలం మన భారతీయుడు శ్రీచక్రవర్తి రాజగోపాలాచారి వైస్రాయ్‌గా ఉండటం జరిగింది. శ్రీ బాబాసాహెబ్ అంబే డ్కర్ గారి నేతృ త్వంలో కొందరు మేధావులు భారతరాజ్యాంగాన్ని రూపొందించారు. అది 26-1-1950 నుండి అమలులోనికి వచ్చింది. ఆ తేదీనే మనం ఇప్పుడు గణతంత్ర దినం-రిపబ్లిక్ డేగా జరుపుకుంటున్నాము.

పత్రికాలోకపు సారథి, వారధి

-డా॥ గోవిందరాజు చక్రధర్

ప్రభుత్వంతో చర్చలకు వచ్చిన మావోయిస్టు అగ్రనేత అక్కిరాజు హరగోపాల్ ఎలియాస్ రామకృష్ణతో ఆయన తన ఇంట్లో బ్రేక్ ఫాస్ట్ మీటింగ్ జరుపుతారు. మధ్యాహ్న పోలీస్ బాస్ అరవింద రావుతో కలిసి హోంమంత్రి కార్యాలయంలో మంతనాలు సాగిస్తారు. సాయంత్రం సద్గురు శివానంద మూర్తి సభలోనూ సాక్షాత్కరిస్తారు.

డాక్టర్ పొత్తూరి వెంకటేశ్వర రావు ఏ కొలమానాలకూ అందరు. ఏ సిద్ధాంత భావజాలంలోనూ కొట్టుకు పోరు. కానీ, అందరూ ఆయనను తమ వాడని అనుకున్నారు. పొత్తూరి వారి నిజాయితీని, చిత్తశుద్ధినీ పరిపూర్ణంగా నమ్మారు. ఇదే పొత్తూరి బ్రాండ్ ఇమేజీ. ఆధునిక జర్నలిజమ్‌లో ఆయన ఒక్కడికి మాత్రమే సాధ్యమైన ప్రత్యేకత ఇది.

ఎడిటర్లే సారథులై, ప్రజాపక్ష వారధులై, రాజీలేని రుషులై, పత్రికా కేతనాన్ని సమున్నతంగా భుజాల మీద మోసిన మహనీయుల స్వర్ణయుగపు చిట్టచివరి లింకు తెగిపోయింది. చిన్న నాటి నుంచి వ్యాయామాలు చేసి పొందికగా రూపు దిద్దుకున్న నిండైన విగ్రహం. పంచె కట్టినా, ప్యాంటు చొక్కా వేసినా ఇమిడిపోగల తీరైన రూపం. దబ్బపండు ఛాయతో, ఆత్మీయమైన పలకరింపుతో అందర్నీ ఆకట్టుకోగలిగిన వ్యక్తిత్వం.

పొత్తూరి వేంకటేశ్వరరావు గుంటూరు సమపంలోని పొత్తూరులో 1934 ఫిబ్రవరి వ తేదీన వెంకటసుబ్బయ్య పన్నగేంద్రమ్మ దంపతులకు జన్మించారు. గుంటూరు హిందూ కాలేజీలో డిగ్రీ చేశారు. సత్యవాణిని గృహలక్ష్మిగా స్వీకరించారు. పొత్తూరి దంపతులకు ఇద్దరు కుమారులు, ఇద్దరు కుమార్తెలు.

ప్రసిద్ధ కాంగ్రెస్ నాయకుడు, దగ్గరి బంధువు వి.బి.రాజు ప్రోద్బలంతో 1957లో హైదరాబాద్‌లో ఆంధ్ర జనతలో అక్షరాలు దిద్దుకుని సుదీర్ఘ పాత్రికేయ ప్రస్థానానికి శ్రీకార్ చుట్టారు. ఆ తదుపరి ఆంధ్ర భూమి, ఈనాడు, ఆంధ్రప్రభ, ఉదయం పత్రికల్లో అయిదు దశాబ్దాలకు పైగా కొనసాగారు. ఆంధ్రప్రభ డేయిలీ, వీక్లీ రెంటికీ సంపాదకత్వం వహించారు. ఆంధ్రప్రభతో పధ్నాలుగేళ్ల అనుబంధం అయినది.

పేలుడు పదార్థాల అక్రమ రవాణాకు సంబంధించిన ప్రత్యేక వార్తా కథనాలను మధ్యలోనే నిలిపివేయాలని ఉదయం యజమాని మాగుంట సుబ్బరామరెడ్డి ఆదేశించారు. తాను ఎడిటర్‌గా ఉండగా ఆ ప్రచురణను నిలిపే ప్రసక్తి లేదని చెప్పి, రాజీ పడకుండా రాజీనామా చేసి బయటకు వచ్చారు.

2004 అక్టోబర్ 15వ తేదీన వై.ఎస్.రాజశేఖర రెడ్డి ప్రభుత్వానికి మావోయిస్టులకు మధ్య జరిగిన చర్చల్లో పౌరస్పందన వేదిక సభ్యుడిగా కీలక పాత్ర నిర్వర్తించారు. ప్రెస్ అకాడమీ అధ్యక్షుడిగా పాత పత్రికలను భావితరాల కోసం డిజిటల్ రూపంలో భద్రపరిచారు. నూతన పదకల్పన కోసమూ కృషి సాగించారు. టి.టి.డి. ప్రచురణల గౌరవ సలహాదారుగానూ, వినియోగదారుల స్టేట్ కమిషన్ సభ్యుడిగానూ సేవలందించారు.

అన్ని వాదాలను, అభిప్రాయాలను అందిస్తూ ప్రజల మధ్య సామరస్య బంధాలను పెంచి పోషించడమే జర్నలిజం మౌలిక కర్తవ్యం. ఈ స్ఫూర్తిని, లక్ష్యాన్ని పొత్తూరి తన వ్యక్తగత లక్షణంగా మలుచుకున్నారు. దశాబ్దాల తరబడి సాగిన సుదీర్ఘ పాత్రికేయత్వంలో విలువల విషయంలో రాజీపడకుండా, బాధ్యతగల పౌరుడిగానూ తన పాత్రను ఆయన బహుముఖీనంగా దిగ్విజయంగా పోషించారు. పొత్తూరి వెంకటేశ్వరరావు ఆధునిక తెలుగు పత్రికారంగంలో నిలువెత్తు శిఖరం. దారిచూపే లైట్‌హౌస్. ఆయన జీవితం జర్నలిస్టులకే గాక అన్ని రంగాలవారికీ స్ఫూర్తిదాయకం.

ఎంతో పరిశోధన, పరిశ్రమ చేసి ఆంధ్ర జాతి అక్షర సంపద తెలుగు పత్రికల పేరిట ప్రామాణిక గ్రంథాన్ని రాశారు. ఆయన రేడియో ప్రసంగాలు 'నాటి పత్రికల మేటి విలువలు' గానూ, ఆంధ్రప్రభ వీక్లీ సంపాదకీయాలు 'వ్యాసప్రభ', 'చింతన', 'చిరస్మరణీయులు' గానూ పుస్తక రూపం తొడిగాయి. వినిధమతాల పరిభాషను సేకరించి కూర్చి, 'పారమార్థిక పదకోశాన్ని' వెలువరించారు. కేంద్ర సాహిత్య అకాడమి కోసం కాళీనాథుని నాగేశ్వరరావు జీవితచరిత్ర రాశారు. 'విధి నా సారథి' పేరుతో తన జీవనయానాన్ని గ్రంథస్థం చేశారు. వాసిరెడ్డి వెంకటాద్రినాయుడి జీవితచరిత్రను రాశారు.

కుర్తాళం పీఠాధిపతి శ్రీసిద్ధేశ్వరానంద భారతీస్వామితో పొత్తూరికి చిన్ననాటి నుంచి చెలిమి, సాన్నిహిత్యం ఉన్నాయి. వారి జీవిత గమనం మంత్ర సిద్ధులపై 'యతి కులపతి' పుస్తకాన్ని రాశారు. జిల్లెళ్లమూడి అమ్మ చూపిన ఆధ్యాత్మిక మార్గంలో నడిచారు. పొత్తూరులో ప్రణవాశ్రమాన్ని నెలకొల్పి అక్కడ గడిపివస్తూ, జపతపాలను నిష్ఠతో సాగించారు.

పొత్తూరి వారికి ఆత్మాభిమానం మెండు ఆత్మగౌరవానికి రవ్వంత లోపం జరిపినా సహించేవారు కారు. అందరితోనూ అంతే సున్నితంగా, మర్యాద పూర్వకంగా మెలిగేవారు. 2013లో మల్టిపుల్ మైలోమా అన& బ్లడ్‌కేన్సర్‌కు గురయ్యారు. అనారోగ్యం బాధిస్తున్నా ఎన్నడూ వైరాగ్యానికి లోనుకాలేదు. ప్రాపంచిక విషయాలపట్ల ఆసక్తినీ, అనురక్తినీ కొనసాగిస్తూనే వచ్చారు.

తాను కోస్తాంధ్రకు చెందినా, తెలంగాణ ప్రజల ఆకాంక్షల మేరకు ప్రత్యేక రాష్ట్రం ఏర్పడాలని మనస్ఫూర్తిగా కోరుకున్న తెలంగాణ వాది ఆయన. వైషమ్యాలతో కలిసి ఉండటం కంటే, అన్నదమ్ముల్లా విడిపోయి ఇరుప్రాంతాల వారు ఆత్మీయంగా కలిసిమెలిసి ఉండాలని కోరుకున్నారు.

తెలుగు విశ్వవిద్యాలయం నుంచి గౌరవ డాక్టరేట్‌ను, రాష్ట్ర ప్రభుత్వం నుంచి ఉత్తమ జర్నలిస్టు అవార్డును అందుకున్నారు. పలు సంస్థలు అనేక పురస్కారాలను అందించారి, సత్కారాలు చేశాయి.

అన్ని వాదాలను, అభిప్రాయాలను అందిస్తూప్రజల మధ్య సామరస్య బంధాలను పెంచి పోషించడమే జర్నలిజం మౌలిక కర్తవ్యం. ఈ స్ఫూర్తిని, లక్ష్యాన్ని పొత్తూరి తన వ్యక్తిగత లక్షణంగా మలుచుకున్నారు. దశాబ్దాల తరబడి సాగిన సుదీర్ఘ పాత్రికేయత్వంలో విలువల విషయంలో రాజీపడకుండా, బాధ్యతగల పౌరుడిగానూ తన పాత్రను ఆయన బహుముఖీనంగా దిగ్విజయంగా పోషించారు. పొత్తూరి వెంకటేశ్వరరావు ఆధునిక తెలుగు పత్రికా రంగంలో నిలువెత్తు శిఖరం. దారిచూపే లైట్‌హౌస్. ఆయన జీవితం జర్నలిస్టులకే గాక అన్ని రంగాలవారికీ స్ఫూర్తిదాయకం.

కరోనా కల్లోలంలో 'కుట్రల' కాలుష్యం

-డేనియల్ జోలే
-పియా లేంబర్టీ

కరోనా వైరస్ ధరిత్రి నాలుగు దిశలకూ వ్యాపిస్తూనే వున్నది. ప్రపంచ వ్యాప్తంగా కరోనా వైరస్ సోకిన వారి సంఖ్య ప్రతి రోజూ పెరుగుతూనే వున్నది. ఈ విశ్వమారి ఎంత వేగంగా విస్తరిస్తున్నదో అంతేవేగంగా దాని గురించిన కుట్ర సిద్ధాంతాలూ వ్యాపిస్తూనే వున్నాయి ! ఈ వైరస్ ప్రపంచం మీద విరుచుకు పడడం వెనుక కొంతమంది శక్తిమంతులు ఉన్నారనేది ఆ సిద్ధాంతాల సారాంశం. భయంకర అంటు వ్యాధుల వ్యాప్తి సమాజాలకు ఎంత ప్రమాదకరమో. ఆ రోగాల విజృంభణ వేనుక కుట్రలు వున్నాయనే వాదాలీ అంతే హానికర మైనవి. వైద్య సంబంధి కుట్ర సిద్ధాంతాల పూర్వాపరాలపై మా విస్తృత పరిశోధన నిర్ధారించిన సత్యమది.

కరోనా వైరస్ వాస్తవంగా ఒక జీవాయథమని, చైనాపై యుద్ధం చేసేందుకై సిఐఏ (అమేరికా గూఢచార సంస్థ) దాని ప్రయోగించిందని ఒక కుట్ర సిద్ధాంతం ప్రతిపాదించింది. ఒక సంభావ్య వ్యాక్సిన్ విక్రయాల మంచి లాభాలు దండుకునేందుకే బ్రిటన్, అమెరికా ప్రభుత్వాలు కరోనా విషక్రిమిని మానవాళి మీదకి వదిలిపెట్టాయని ఇతర కుట్ర వాదాలు విశ్వసిస్తున్నాయి.

ఈ కుట్ర సిద్ధాంతాలలో అత్యధిక భాగం నమ్మశక్యం కానివే అయినప్పటికీ దుష్టశక్తులు ఋక రహస్య పథకాన్ని అనుసరిస్తుంటాయనే నమ్మకం ప్రతి సమాజంలోనూ అత్యంత విస్తృతంగా వున్నది. ఈ నమ్మకాలు, తరచు ఆరోగ్య భద్రతకు సంబంధించినవై వుంటాయి. గత ఏడాది స్పెయిన్‌లో నిర్వహించిన ఒక సర్వేకు ప్రతిస్పందించిన వారిలో 16 శాతం మంది హెచ్ఐవిని ఒక రహస్య సమూహం లేదా సంస్థ లక్ష్యం కోసమే సృష్టించి, ప్రపంచ మంతటా వ్యాపింపచేశారని విశ్వసిస్తున్నట్టు వెల్లడయింది. 'వ్యాక్సిన్‌ల హానికర ప్రభావాలను ఉద్దేశపూర్వకంగానే ప్రజలకు తెలియజేయడం లేదని ఫ్రాన్స్‌లో 27 శాతం మంది, బ్రిటన్‌లో 12 శాతం మంది విశ్వసిస్తున్నట్టు ఒక సర్వేలో వెల్లడయింది. కరోనా వైరస్ గురించిన నకిలీ వార్తలు, కుట్ర వాదాల వ్యాప్తి ఎంత తీవ్రంగా వున్నదంటే వాటిని ఖండించి వాస్తవాలను వెల్లడించేందుకు ప్రపంచ ఆరోగ్య సంస్థ ఒక వెబ్ పేజీనే సృష్టించవలసివచ్చింది.

కుట్ర సిద్ధాంతాలు ఊపిరిపోసుకోవడ మనేది ఉగ్రవాద దాడులు, రాజకీయ విప్లవాలు, ఆర్థిక కల్లోలాలు మొదలైన సంక్షోభ పరిస్థితులతో ముడి పడివున్నదని పరిశోధనలు ధ్రువీకరించాయి. సమాజంలో అనిశ్చిత పరిస్థితులు నెలకొన్నప్పుడు, ముప్పు వాటిల్లేందుకు అవకాశాలు వున్న సమయాలలో కుట్ర సిద్ధాంతాలు మొగ్గ తొడుగుతాయి. ప్రపంచ అస్తవ్యస్తతను అర్థం చేసుకునేందుకు మనం చేసే

కరోనా వైరస్ విజృంభిస్తున్న సందర్భంలో వైద్య సంబంధిత కుట్ర సిద్ధాంతాలు సమాజానికి చాలా హానికరమైనవి. ఆరోగ్యభద్రత విషయమై వ్యక్తులు తీసుకునే నిర్ణయాలను అవి ప్రభావితం చేస్తాయి. అంతేకాక సమాజంలోని వివిధ వర్గాల మధ్య నిర్హేతుక విరోధభావాన్ని పెంపొందించి, హింసాకాండ ప్రజ్వరిల్లడానికి కారణ మవుతాయి. కరనో వైరస్‌ను నిరోధించేందుకు పటిష్ట చర్యలు తీసుకోవడంతోపాటు ఆ విషక్రిమిని గురించి తప్పుడు సమాచారం, కుట్ర సిద్ధాంతాల వ్యాప్తిని అరికట్టేందుకూ పూనుకోవాల్సిన నైతిక బాధ్యత ప్రభుత్వాలపై వున్నది.

ప్రయత్నాలను అవి తప్పక ప్రభావితం చేస్తాయి. విష క్రిములు విజృంభించినప్పుడు కూడా సరిగ్గా, ఇటువంటి పరిస్థితులే వుండడం కద్దు. కరోనా వైరస్ విషయమై కుట్ర సిద్ధాంతాల వ్యాప్తికి ఆ పరిస్థితులే కారణమని మరి చెప్పనవసరం లేదు.

2015-16 సంవత్సరంలో జికా వైరస్ సోకినప్పుడు కూడా ఇటువంటి పరిస్థితులే వున్నాయి. ఆ విషక్రిమి ఒక సహజ సంఘటన కాదని, అది యథార్థానికి ఒక జీవాయుధమని జికా కుట్ర సిద్ధాంతాలు గట్టిగా ప్రతిపాదించాయి. కుట్ర సిద్ధాంతాల గురించిన మాటా మంతీ జికాతో నెలకొన్ని అనిశ్చితిని తట్టుకునేందుకు ప్రజలకు ఒక ఆలంబన అయింది. వ మహమ్మారి విరుచుకు పడిన సందర్భంలో సామాజిక మాధ్యమాలలోని వ్యాఖ్యల నిశిత పరిశీలనో ఈ విషయం వెల్లడయింది.

వైరస్‌ల వ్యాప్తితో వాటిల్లే అనారోగ్యం నుంచి బయటపడేందుకు ఆరోగ్య భద్రతా నిపుణుల, సంస్థల సలహాలు, సిఫారసులను విశ్వసించి, పాటించడం చాలా ముఖ్యం. అయితే కుట్ర సిద్ధాంతాలను విశ్వసించే ప్రజలు సాధారణంగా అటువంటి వారి సలహాలను లక్ష్యపెట్టరు. విశ్వసించని ప్రజలు సహేతుక మైన వైద్య సలహాలను ఎలా పాటిస్తారు ? వైద్య సంబంధి కుట్ర సిద్ధాంతాలు వైద్య నిపుణులపై అపనమ్మకాన్ని పెంచుతాయని పరిశోధకులు వెల్లడించారు. ఇటువంటి అపనమ్మకాల వల్ల బ్రజలు తమను తాము కాపాడుకోవడంలో విఫలమవుతారు. వైద్య నిపుణలను విశ్వసించక పోవడం వల్లే టీకాలు (వ్యాక్సిన్లు) వేయించుకోవడానికి సూక్ష్మ జివినాశకాల (యాన్టీబయోటిక్స్)ను తీసుకోవడానికి నిరాకరిస్తూ వనమూలికలు, విటమన్లపై ప్రధానంగా ఆధారపడుతున్నారు. అంతేగాక వైద్య నిపుణులు కాని స్నేహితులు, కుటుంబ సభ్యులు సూచించే చిట్కా వైద్యాలవైపు మొగ్గు చూపుతువ్నరు.

ఈ వాస్తవాల నేపథ్యంలో ఇప్పుడు కరోనా వైరస్ గురించి కుట్ర సిద్ధాంతాలను విశ్వసించే వారు వైద్యనిపుణుల సలహాలను కనీస మాత్రంగా కూడా పాటించకపోయే అవకాశం ఎంతైనా వున్నది. తరచు సబ్బుతో చేతులు కడుక్కోవడం, వైరస్ వ్యాపించిన ప్రదేశాలకు వెళ్ళి వచ్చినవారు తమను తాము ఇతరుల నుంచి వేరుపరచుకుని నిర్దిష్టసమయం సేపు ఒంటరిగా వుండడం మొదలైన సూచనలను విధిగా పాటించాలి. లేనిపక్షంలో పర్యవసానాలు తీవ్రంగా వుంటాయనే సత్యాన్ని వారు అర్థం చేసుకోవాలి. అలా కాకుండా వ్యాధి నిరోధక ప్రవర్తనా పద్ధతుల పట్ల నిర్లక్ష్య ధోరణి వహిస్తూ ప్రమాదకరమైన ప్రత్యామ్నాయ చికిత్సలు చేయించుకోవడం జరిగితే ఆ విషక్రిమి మరింతగా వ్యాపించడమే కాకుండా మరెంతో మంది ప్రజలు ఆ మహమ్మారి

श्रद्धांजलि

वरिष्ठ पत्रकार पोत्तूरी वेंकटेश्वर राव का निधन

केसीआर तथा जगन सहित कई प्रमुकों ने दी श्रद्धांजलि

वरिष्ठ पत्रकार पोत्तूरी वेंकटेश्वर राव (८६) का निधन हो गया। पिछले कुछ समय से अस्वस्थ रहे वेंकटेश्वर राव ने अपने आवास में अंतिम साँस ली। उनका जन्म ८ फरवरी, १९३४ को गुंटूर जिले में हुआ था।

पत्रकारिता के क्षेत्र में ५ दशकों तक उन्होंने अपनी सेवाएँ दीं। प्रमुख समाचार पत्रों में काम करते हुए उन्होंने अपनी पहचान बनाई। वर्ष २००० में उन्होंने 'नाटि पत्रिका मेटी विलवलू' नामक पुस्तक लिखी। इसके अलावा उन्होंने २००१ में 'चिंतन' तथा 'चिरस्मरणियुलू' नामक पुस्तकें भी लिखीं। पूर्व प्रधानमंत्री पी.वी. नरसिम्हा राव पर लिखी गई पुस्तक, 'ईयर ऑफ पॉवर' के वह सह-लेखक रहे।

संयुक्त आंध्र प्रदेश के कार्यकाल के दौरान वह प्रेस अकादमी के चेयरमैन बने। उनकी अंत्येष्टी शाम जुबली हिल्स स्थित महाप्रस्थान में कर दी गई।

वे आर्य समाज से भलिभांती परिचित थे महर्षि दयानन्द जी के साहित्य में रुची रखते थे। सभा जब कभी आर्य समाज के बड़े-बड़े कार्यक्रमों में आमंत्रित करती रही है। आर्य प्रतिनिधि सभा आ.प्र.-तेलंगाना पोत्तुरी वेंकटेश्वर राव के प्रति हृदय पूर्वक श्रंद्धाजलि अर्पित करती है। **-विट्ठल राव आर्य**

मंत्री, आर्य प्रतिनिधि सभा आ.प्र. -तेलंगाना

శ్రద్ధాంజలి

అస్తమించిన మాతా మాణికేశ్వరి

కొండపై భక్తుల దర్శనార్థం మూడ్రోజుల పాటు పార్థివ దేహం

తెలంగాణ సరిహద్దులోని కర్ణాటక రాష్ట్రం సూర్యనంది క్షేత్రం యానగుందిలో మాణిక్య గిరి కొండపై వెలిసిన మాతా మాణికేశ్వరి (86) తేది 7-3-2020 శనివారం రాత్రి 7.30 గంటలకు పరమపదించారు. ఈ విషయం సోషల్ మీడియా ద్వారా తెలుసుకున్న భక్తజనం దిగ్భ్రాంతికి లోన య్యారు. మాతకు కర్ణాటక, తెలంగాణ, ఆంధ్ర మహారాష్ట్ర తదితర ప్రాంతాల్లో లక్షలాది మంది భక్తులు ఉన్నారు. మాత పార్థివ దేహాన్ని ధ్యాన మందిరంలో ఆదివారం నుంచి మూడ్రోజుల పాటు భక్తుల దర్శనార్థం ఉంచారు.

మాత జీవితచరిత్ర...

మల్లాబాద్‌లో 1934 జూలై 26న ఆశమ్మ, బుగ్గప్మ దంపతులకు కుమార్తెగా మాణికేశ్వరి మాత జన్మించారు. బాల్యదశ నుంచే మాతాజీ ధ్యాన నిష్ఠలోనే గడిపారని ప్రచారంలో ఉంది. మాతా మాణికేశ్వరి జన్మించిన తర్వాతే బుగ్గప్ప కుటుంబం ఆర్థికంగా అభివృద్ధి చెందుతూ వచ్చిందని చెబుతారు. మాత 1950లో యానగుందిలోని రామాలయంలో కొంతకాలం నివసించి సిద్ధేశ్వర గుట్టపై శివాలయాన్ని నిర్మించి శివుడికి నీళ్లతోనే దీపం పెట్టినట్లు కథనాలు ఉన్నాయి. యానగుందిలో ఆశ్రమం నెలకొల్పిన తర్వాత మాత అదృశ్యమై శ్రీసైలంలో ప్రత్యక్షమై భక్తులకు దర్శనమిచ్చారని ప్రతీతి. మాత సిద్ధేశ్వర గుట్టపై చేరిన తర్వాత మాత పేరిట యానగుంది మాణిక్యగిరిగా

श्रद्धांजलि

आर्य समाज बोधन के पूर्वमंत्री

श्री शंकरराव पाटिल

नहीं रहे।

आर्य समाज बोधन के पूर्वमंत्री श्री शंकरराव पाटिल जी का निधन दिनांक ८ मार्च २०२० को हुआ। वे बहुत ही कर्मठ कार्यकर्ता थे और पिछले कई वर्षों से आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रतिनिधि थे। सभा की कोई भी समस्या हो या कोई भी बड़े-बड़े कार्यक्रम हो उसमें सदैव साथ रहते थे। वे कुछ समय तक हैदराबाद के वैदिक आश्रम कन्यागुरुकुल बेगमपेट में बच्चों की शिविर में बड़ा सहयोग दिया। उनकी सेवाओं को सभा कभी नहीं भूल सकती। वे सदैव प्रसन्नमुद्रा में रहते थे। ऐसे व्यक्तित्व वाले सदस्य का खोना आर्य समाज के लिए बड़ी क्षति है। सभा परमात्मा से प्रार्थना करती है कि दिवंगत आत्मा को सद्गति प्रदानकर दु:खी परिवार को कष्ट सहने का साहस दे। **-विट्ठल राव आर्य**

मंत्री, आर्य प्रतिनिधि सभा आ.प्र. -तेलंगाना

నామకరణం జరిగింది. 9వ తేదిన అనగా సోమవారము నాడు వారి అంతక్రియలు పూర్తి చేశారు. ఆర్య సమాజముతో, ఆర్య సమాజ కార్యకర్తలతో వారికి సన్నహిత సంబంధము ఉండింది. అనేక సందర్భాల్లో ఆర్య సమాజం పక్షాన మాణికిగిరి పై యజ్ఞయాగాదులు మరియు శివిరాలు నిర్వహించటం జరిగినది. ఇటువంటి శివిరాలకు, యజ్ఞాలకు అమ్మ గారి పూర్తి సహకారం ఉండేది. ఆర్య ప్రతినిధి సభ పక్షాన మాత మాణికేశ్వరి గారికి వినమ్ర శ్రద్ధాంజలి. **–విఠల్ రావు ఆర్య,** మంత్రి ఆర్య ప్రతినిధి సభ, ఆ.ప్ర.–తెలంగాణ, హైదరాబాద్.

श्रद्धांजलि

वरिष्ठ स्वतंत्रता सेनानी श्री सुधाकर चतुर्वेदी जी का निधन

वरिष्ठ स्वतंत्रता सेनानी एवं जलियांवाला बाग हत्याकांड के प्रत्यक्षदर्शी श्री सुधाकर चतुर्वेदी का निधन उनके १२३ साल में कर्नाटक प्रांत के बेंगलूर में हुआ ।

आज़ादी के संघर्ष के दौरान चतुर्वेदी को १३ वर्षों का कारावास हुआ था । भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के दौरान वे १९ अप्रैल १९१९ के जालियांवाला बाग हत्याकांड के प्रत्यक्षदर्शी थे । उनको इस नृशंस हत्याकांड का देश में एक मात्र जीवित गवाह माना जाता था। इस हत्याकांड में ब्रिटिश सैनिकों की फायरिंग में सैकड़ों लोगों की मौत हुई । तत्कालीन सरकार ने फायरिंग में ६३० लोगों की मौत होने की बात स्वीकारी थी । बाद में महात्मा गाँधी ने सुधाकर चतुर्वेदी को इस हत्याकांड में मृतकों का सामूहिक अंतिम संस्कार करने का दायित्व सौंपा था । महात्मा गाँधी की सूचना पर वेदमंत्रों के ज्ञाता चतुर्वेदी ने मृतकों का नदी के किनारे अंतिम संस्कार करवाया था । उन्होंने महात्मा गांधी के स्टेनोग्राफर के रूप में भी कार्य किया था ।

उनका जन्म वर्ष १८९७ में रामनवमी के दिन शहर के बलेपेटे में हुआ था । ११ वर्ष की उम्र में सुधाकर हिमाचल प्रदेश का अध्ययन करने चले गए । २५ वर्षों तक उन्होंने वेदों का अध्ययन किया । इसी कारण आर्य प्रतिनिधि सभा ने उनको चतुर्वेदी पदवी प्रदान की थी । उनकी कन्नड़, संस्कृत, अंग्रेजी तथा हिंदी इन चारों भाषाओं पर अच्छी पकड़ थी । उन्होंने इन चारों भाषाओं में साहित्य रचना की है ।

वे स्वामी श्रद्धानन्द जी के अनन्य भक्त थे । महर्षि दयानन्द जी के लिखे साहित्य का उन्होंने कन्नड़ में अनुवाद किया । वे आर्य समाज के प्रति पूर्ण रूप से समर्पित थे । ऐसे महान व्यक्ति का खोना आर्य समाज की बहुत बड़ी क्षति है जिसकी पूर्ति भविष्य में असम्भव है । आर्य प्रतिनिधि सभा, ऑ.प्र.-तेलंगाना परमात्मा से प्रार्थना करती है कि दिवंगत आत्मा को सद्‌गती प्रदान कर उनके परिवार को दुःख सहने का साहस दे । **-विट्ठल राव आर्य**

मंत्री, आर्य प्रतिनिधि सभा आ.प्र. -तेलंगाना

श्रद्धांजलि

सभा को यह जानकर दुःख हुआ कि आर्य प्रतिनिधि सभा मुंबई के मंत्री श्री अरुण अबरोल जी की धर्मपत्नी श्रीमती सुधा अबरोल जी का दिनांक १ मार्च २०२० को अकस्मिक निधन हुआ । आर्य प्रतिनिधि सभा, ऑ.प्र.-तेलंगाना परमात्मा से प्रार्थना करती है कि दिवंगत आत्मा को सद्‌गती प्रदान कर उनके परिवार को दुःख सहने का साहस दे ।

विट्ठल राव आर्य

मंत्री, आर्य प्रतिनिधि सभा आ.प्र. -तेलंगाना

శ్రద్ధాంజలి

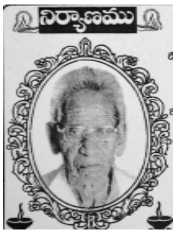

శ్రీ రవికుమార్ కంప్యూటర్ ఆపరేటర్, ఆర్య ప్రతినిధి సభ, సుల్తాన్ బజార్, హైదరాబాద్ యొక్క తండ్రిగారైన శ్రీ దార వీరప్ప గారు తేది 01-03-2020 ఆది వారం నాడు స్వగ్రామమైన భాస్కరాపురం, మం॥ అన్నపురెడ్డిపల్లి, భద్రాద్రి కొత్తగూడెం జిల్లాలో స్వర్గస్తులైనందుకు చింతిస్తున్నాము. ఆర్య ప్రతినిధి సభ పక్షాన కీ॥ శే॥ దార వీరప్ప గారికి శ్రద్ధాంజలి. **-విఠల్ రావు ఆర్య**, మంత్రి ఆర్య ప్రతినిధి సభ, ఆ.ప్ర. -తెలంగాణ, హైదరాబాద్.

श्रद्धांजलि

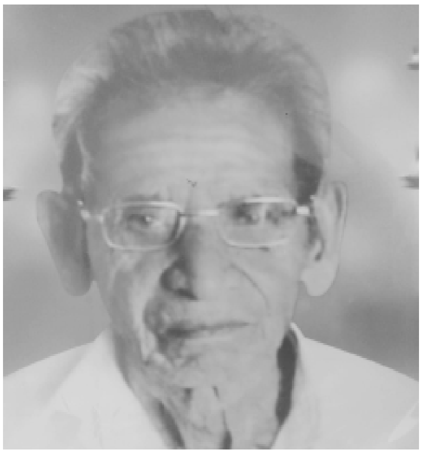

सभा को यह जानकर दुःख हुआ कि हमारे सभा के पूर्व कम्प्यूटर ऑपरेटर रवि कुमार के पिता श्री दारा वीरप्पा जी का दिनांक १ मार्च २०२० को भद्रादी कोत्तागुडम के भास्करापुरम ग्राम में देहावसान हुआ । वे काफी वृद्ध थे । आर्य प्रतिनिधि सभा, ऑ.प्र.-तेलंगाना ईश्वर से प्रार्थना करती है कि दिवंगत आत्मा को सद्‌गति प्रदान कर परिवार को कष्ट सहने का साहस दे ।-विट्ठल राव आर्य,

-मंत्री आर्य प्रतिनिधि सभा, ऑ.प्र.-तेलंगाना

श्रद्धांजलि

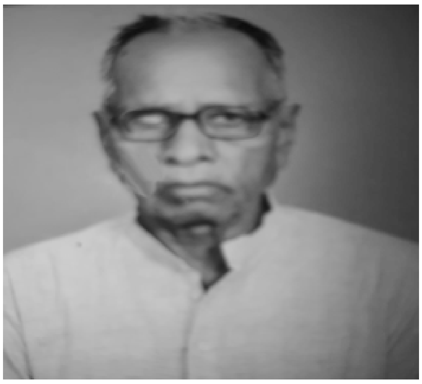

आर्य समाज बोधन के निष्ठावान सेवक तथा आर्य समाज के मंत्री

श्री लक्ष्मण राव जी

का आज दिनांक १३ फरवरी २०२० के दिन प्रातः अचानक उनके गृहनिवास पर निधन हुआ ।

आर्य प्रतिनिधि सभा आ.प्र. -तेलंगाना की ओर से श्री लक्ष्मण राव जी को विनम्र श्रद्धांजलि परमात्मा से प्रार्थना है कि दिवगंत आत्मा को शांति प्रदान करें तथा परिजनों को साहस दे।

विट्ठल राव आर्य

मंत्री, आर्य प्रतिनिधि सभा आ.प्र. -तेलंगाना

భారినపడతారు. కరోనా వైరస్ నుంచి కాపాడుకోవడానికి ఇప్పటికే ఎంతో మంది ‘ప్రత్యామ్నాయ చికిత్సా పద్ధతులను’ అనుసరిస్తున్నారు. అవి చాలవరకు అత్యంత ప్రమాదకరమైనవి. బాగా ప్రాచుర్యంలో వున్న ఒక కుట్ర సిద్ధాంతం చెప్పుతున్నదేమిటంటే ఈ విషక్రిమిని ‘గుప్త రాజ్యం’ (రహస్యంగా పనిచేసే రాజ్యవ్యవస్థ అంతర్భాగం డీప్ స్టేట్) ప్రవేశపెట్టిందని పేరొంది. అంతేగాక చలువ సున్నపు నీటిని (బ్లీచ్)ను తాగితే ఆ వైరస్ సోకకుండా కాపాడుకోవచ్చని కూడా ఈ కుట్ర సిద్ధాంతాన్ని సమర్థిస్తున్నవారు సూచించారు !

వైద్య సంబంధి కుట్రి సిద్ధాంతాల వ్యాప్తి, సమాజంలోని కొన్ని వర్గాల వారికి విషమ పర్యవసనాలను సృష్టించే ప్రమాదం ఎంతైనా వున్నది. ఐరోపాలో ప్లేగు వ్యాధి ప్రబలినపుడు ఆ మహమ్మారి విజృంభణకు యూదులే బాధ్యులని ఆరోపిస్తూ వారిని బలిపసువులను చేశారు. ఈ అహేతుక కుట్ర సిద్ధాంతాల ప్రభావంతో ఐరోపా అంతటా యూదులను పెద్ద ఎత్తున ఊచకోత కేశారు. కరోనా వైరస్ వ్యాప్తి కూడా ప్రపంచవ్యాప్తంగా జాతి సంబంధి దాడుల పెరుగుదలకు దారి తీస్తోంది. తూర్పు ఆసియా దేశాలకు చెందిన ప్రజలను లక్ష్యంగా చేసుకుని ఈ దాడులు జరుగుతున్నాయి. అయితే, ఇటువంటి పరిణామాలకు మనం భయపడవలసిన అవసరం లేదు. కుట్ర సిద్ధాంతాల వ్యాప్తిని మనం అరికట్టగలం. వైద్య సంబంధి కుట్రి సిద్ధాంతాలకు వ్యతిరేకంగా చేసే ప్రతివాదనలు మంచి ఫలితాలను సాధించాయి. వీటిలో నిజం లేదనే సత్యాన్ని ప్రజలు అర్థం చేసుకోవడానికి అవి విశేషంగా తోడ్పడ్డాయి.

కుట్ర సిద్ధాంతాలు సమాజానికి చాలా హానికరమైనవి. ఆరోగ్యభద్రత విషయమై వ్యక్తులు తీసుకునే నిర్ణయాలను ప్రభావితం చేయడంతో పాటు సమాజంలోని వివిధ వర్గాల మధ్య నిర్హేతుక విరోధ భావాన్ని పెంపొందించి, హింసాకాండ ప్రజ్వరిల్లడానికి అవి కారణమవు తాయి. ఈ వాస్తవాలను దృష్టిలో వుంచకుని కరోనా వైరస్‌ను నిరోధించేందుకు పటిష్ఠ చర్యలు తీసుకోవడంతోపాటు ఆ విషక్రిమిని గురించి తప్పుడు సమాచారం, కుట్ర సిద్ధాం తాల వ్యాప్తిని అరికట్టేందుకు పూనుకోవాల్సిన నైతిక బాధ్యత ప్రభుత్వాలపై వున్నది.

(‘ది కాన్వర్సేషన్’ సౌజన్యం)

ए बता तेरा धर्म कौनसा है?

मस्जिद पे गिरता है
मंदिर पे भी बरसता है
ए बादल बता तेरा
धर्म कौनसा है?
इमाम की तू प्यास बुझाए
पुजारी की भी तृष्णा मिटाए
ए पानी बता तेरा
धर्म कौन सा है?
मजारों की शान बढाता है
मूर्तियों को भी सजाता है
ए फूल बता तेरा
धर्म कौनसा है?
सारे जहाँ को रोशन करता है
सृष्टी को उजाला देता है
ए सूरज बता तेरा
धर्म कौनसा है?
मुस्लिम तूझ पे कब्र बनाता है
हिंदू आखिर तूझ में ही
विलीन होता है
ए मिट्टी बता तेरा
धर्म कौनसा है?
खुदा भी तू है
ईश्वर भी तू है
पर आज बता ही दो
ए भगवान..
आपका धर्म कौनसा है?
सोचकर यही मंदिर
मस्जिद भी दंग है
कि....
हमें खबर भी नहीं
और हमारी जंग है
ऐ दोस्त धर्म से दूर हटकर
इंसान बनो
क्योंकि इंसानियत का
इंसानियत ही धर्म होता है

శ్రద్ధాంజలి

ఆర్య సమాజ వృద్ధ నాయకులు, సీతాఫల్ మండి ఆర్య సమాజ కర్త-ధర్తయైన శ్రీ యుత రావికంటి కృష్ణమూర్తి గారి తృతీయ కుమారుడు శ్రీ రావికంటి దీన్ దయాళ్ గారు అకస్మాత్తుగా తేది 12-3-2020 నాడు పరమపదించారు. వీరు ఆచార్యా జ్యోతిశ్రీ గారి భర్త. ఆచార్యా జ్యోతిశ్రీ గారు వైదిక ధర్మ ప్రచారకురాలని ఆర్య బంధువులందరికీ చిరపరిచితులు. అదే విధంగా పిట్లం ఆర్య సమాజ పెద్దలైన శ్రీమతి విమలమ్మ-మండలి నారాయణ గారి కుమార్తె. చిన్న వయస్సులో తన భర్తని కోల్పోవటం జ్యోతిశ్రీ గారికి పూరించలేని లోటు. ఇది చాల బాధకరమైన విషయం. కీ॥ శే॥ దీన్ దయాళ్ గారు సరళ స్వభావగల, చిత్తశుద్ధిగల ఆర్య సమాజ కార్యకర్త. వీరి మరణము ఆర్య బంధువులకు, ఆర్య జగత్తుకు తీరని లోటు. చిన్నవయస్సులో దీన్ దయాళ్ గారు స్వర్గస్థులై నందుకు చింతిస్తున్నాము. ఆర్య ప్రతినిధి సభ పక్షాన కీ॥ శే॥ దీన్ దయాళ్ గారికి వినమ్ర శ్రద్ధాంజలి. కుటుంబ సభ్యులకు మరియు ప్రత్యేకంగా ఆచార్యా జ్యోతిశ్రీ గారికి, ఆర్. కృష్ణమూర్తి గారికి పరమాత్ముడు ధైర్యము, సాహసము కలిగించాలని ప్రార్థిస్తున్నాము.

-విఠల్ రావు ఆర్య, మంత్రి ఆర్య ప్రతినిధి సభ, ఆ.ప్ర.-తెలంగాణ, హైదరాబాద్.

TRIBUTE

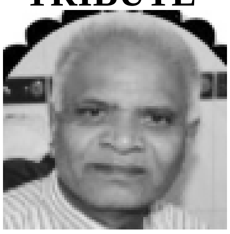

Our good friend and sympathiser of Arya Samaj, Late Sri K. Madhusudhan Rao who was former Secretary of Laxmi Apartment, Nalgonda X Road, Malakpet, Hyderabad. Arya Pratinidhi Sabha, A.P. -Telangana pays homoge to, in Loving Memory of Late Sri K. Madhusudhan Rao who was Retd. Perfusionist and Advocate and neighbour of me. Mr. Madhusudhan Rao left us on 5th March 2020.

-Vithal Rao Arya
Secretary Arya Pratinidhi Sabha, A.P.-Telangana.

పూజ్యశ్రీ స్వామి బ్రహ్మానంద సరస్వతి గారి అధ్యక్షతలో ఆర్షగురుకులం బ్రాహ్మమహావిద్యాలయం యొక్క 38వ వార్షికోత్సవం మరియు షోడశకుండీయ యజ్ఞమహోత్సవము 3 రోజులు ఘనంగా నిర్వహించబడింది. ఇట్టి గురుకుల ఉత్సవకార్యక్రమంలో గురుకుల సమ్మేళనం ఆర్య సమాజాల సమ్మేళనం జరిగింది. ఇందులో సార్వదేశిక ఆర్య ప్రతినిధి సభ దిల్లీ యశస్వీ అధ్యక్షులు స్వామి ఆర్యవేశ గారు, గురుకుల ఆచార్యులు, బ్రహ్మచారులు ఆర్య బంధువులందరు పాల్గొని విజయవంతం చేసినారు.

మహాయజ్ఞం నిర్వహిస్తున్న ఆర్య సభ్యులు

గురుకులాలతోనే ఉత్తమ సమాజం

పాతరాజంపేట (కామారెడ్డి గ్రామీణం) : ఉత్తమ మానవ నిర్మాణం సమాజం తయారు కావాలని ఆర్షగురుకులం వ్యవస్థాపకుడు స్వామి బ్రహ్మానంద సరస్వతి పేర్కొన్నారు. పాతరాజంపేట ఆర్షగురుకులంలో శుక్రవారం గురుకుల ఆచార్యుల సమ్మేళనం, షోడశ కుండీల మహాయజ్ఞం నిర్వహించారు. ఈ సందర్భంగా స్వామిబ్రహ్మానంద సరస్వతి గురుకుల జెండావిష్కరణ చేపట్టి కార్యక్రమాలను ప్రారంభించారు. వేదమంత్రోచ్చరణల మధ్య మహాయజ్ఞం చేపట్టారు. అనంతరం స్వామీజీ మాట్లాడుతూ... గురుకులాలతోనే ఉత్తమ మానవ నిర్మాణం సాధ్యమన్నారు. ఇక్కడ అభ్యసించిన విద్యార్థులు స్వశక్తితో ఎదుగుతారని అన్నారు. అనంతరం బ్రహ్మచారులకు ఉపనయనం. వేదారంభ సంస్కారం నిర్వహించారు. ఆచార్యులు ఉదయన్, నీరజ, సునీత, వేదమిత్రి, నరేంద్ర, ట్రస్టు ప్రతినిధులు పాల్గొన్నారు.

Date of Publication 2nd and 17th of every Month, Date of Posting 3rd and 18th of every Month
आर्य जीवन 18-03-2020 Registered-Reg. No. HD/783/2018-20 RNI No. 52990/93

ఆర్య జీవన్
హిందీ-తెలుగు ద్విభాషా పక్ష పత్రిక
Editor : Sri Vithal Rao Arya, M.Sc. LL.B., Sahityaratna.
Arya Pratinidhi Sabha AP-Telangana, Sultan Bazar, Hyderabad-500095.
Phone No. : 040-66758707, 24753827, Fax : 040-24557946.
Annual Subscription Rs. 250/- సంపాదకులు : విఠల్ రావు ఆర్య, మంత్రి సభ

To,

No. 405844/2020

Date: 04-02-2020

आर्य प्रतिनिधि सभा आ.प्र. (संयुक्त आन्ध्र प्रदेश अर्थात आ.प्र.-तेलंगाना राज्य)

घर नं. 4-2-15, महर्षि दयानन्द मार्ग, सुल्तान बाज़ार, हैदराबाद, के चुनाव के संदर्भ में

आवश्यक सूचना

मान्यवर प्रधान जी/मंत्री जी
आर्य समाज ....

सप्रेम नमस्ते !

मान्यवर महोदय,

आर्य प्रतिनिधि सभा आ.प्र.-तेलंगाना (संयुक्त आन्ध्र प्रदेश अर्थात आ.प्र.-तेलंगाना राज्य) का साधारण अधिवेशण दिनांक 02-02-2020 रविवार के दिन पं. नरेन्द्र भवन में सभा प्रधान ठा. लक्ष्मण सिंह जी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। साधारण सभा के मान्य सद्स्यों से सहित विशेष अतिथि के रूप में मान्य पं. धर्मपाल शास्त्री जी उपस्थित रहें। साधारण सभा में विषय सूचि के अनुसार अन्य विषयों सहित विशेषकर आर्य प्रतिनिधि सभा, आ.प्र. -तेलंगाना (संयुक्त आन्ध्र प्रदेश अर्थात आ.प्र.-तेलंगाना राज्य) के कार्यकाल के अवधि को अगले 6 महिने तक बढाने का सर्वसम्मति से निर्णय लिया गया। आर्य प्रतिनिधि सभा आ.प्र.-तेलंगाना (संयुक्त आन्ध्र प्रदेश अर्थात आ.प्र.-तेलंगाना राज्य) के चुनाव 5 अगस्त 2020 से पूर्व कभी भी आर्य प्रतिनिधि सभा के नियमानुसार व सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के नियमानुसार सम्पन्न करवाने का सर्व सम्मति से निर्णय लिया गया। आर्य प्रतिनिधि सभा आ.प्र.-तेलंगाना (संयुक्त आन्ध्र प्रदेश अर्थात आ.प्र.-तेलंगाना राज्य) की साधारण सभा के लिए आर्य समाजों से आनेवाले प्रतिनिधि नियमानुसार निर्वाचित प्रतिनिधि ही होने चाहिए। अतः आर्य समाजों के अधिकारियों, विशेषकर समाज के मंत्री-प्रधानों को सभा निर्देश देती है कि आर्य समाज के सभी उपनियमों का विधिवत ढंग से पालनकर आर्य समाज के चुनाव को सम्पन्न करवाएं। **साधारण सभा में सर्वसम्मति से यह भी निर्णय हुआ कि आर्य समाजें अपनी समाज के चुनाव की तिथि सभा से सम्पर्क कर निश्चित करें तथा सभा को लिखित पूर्वक सूचित करें। समाज के चुनाव को सम्पन्न करवाने के लिए आर्य प्रतिनिधि सभा से चुनाव अधिकारी को भेजा जाएगा।** चूंकि यह सभा के साधारण सभा का निर्णय है अतः आर्य समाज के चुनाव को सम्पन्न करवाने लिए सभा, चुनाव अधिकारि भेजेगी। चुनाव की पूर्व प्रक्रिया को हर समाज को पूरा करना होगा तथा सभी नियमों का पालन करते हुए प्रक्रियाओं का पूर्ण करना होगा।समाजों के चुनाव 25 मार्च से पूर्व सम्पन्न कर किसी भी हालत में 30 अप्रैल के पूर्व सभी विवरणों सहित सभा के नियमों का पालन करते हुए प्रतिनिधि आवेदन पत्र सभा कार्यालय में दाखल करें। निर्वाचित प्रतिनिधि का आधार कार्ड, मोबाईल नम्बर तथा पासपोर्ट साईज़ फोटा का होना आवश्यक है और जानकारी के लिए समाज व सभा के नियमों को पढ़े और पालन करें।

समाजों के निर्वाचन में मात्र समाज के सभासद् ही मतदान के अधिकारी होंगे। प्रथम 9 सभासदों पर एक प्रतिनिधि पश्चात् प्रति 20-20 सभासदों पर एक-एक प्रतिनिधि होगा। विवादास्पद समाजों के चुनाव आर्य प्रतिनिधि सभा करवाएगी या अंतरिम समिति का गठन आर्य प्रतिनिधि सभा करेगी जैसे आर्य समाज लालागुड़ा, आर्य समाज अशोक बाज़ार, आर्य समाज नलगोण्डा आदि।

भवदीय

विट्ठल राव आर्य

मंत्री सभा

आर्य प्रतिनिधि सभा, आ.प्र. (संयुक्त आन्ध्र प्रदेश अर्थात आ.प्र.-तेलंगाना राज्य))

THE VIEWS & THE NEWS PUBLISHED IN THIS ISSUE MAY NOT NECESSARILY BE AGREEABLE TO THE EDITOR.
Editor : Sri Vithal Rao Arya E-mail : acharyavithal@gmail.com, Mobile : 09849560691.

సంపాదకులు : శ్రీ విఠల్ రావు ఆర్య, మంత్రి సభ, ఆర్య ప్రతినిధి సభ ఆ.ప్ర. -తెలంగాణ, సుల్తాన్ బజార్, హైదరాబాద్-95. Ph : 040-24753827, E-mail : acharyavithal@gmail.com

संपादक : श्री विट्ठल राव आर्य, मंत्री सभा ने सभा की ओर से आकृति प्रिन्टर्स, चिक्कड़पल्ली में मुद्रित करवा कर प्रकाशित किया।
प्रकाशक : आर्य प्रतिनिधि सभा, आं.प्र. -तेलंगाना, सुल्तान बाज़ार, हैदराबाद-500 095.